HIRA PUBLICATION

ऐ ईमान वालो !
इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ।
(कुर्आने करीम)

तोहफ़-ए-मोमिन

(दीन के पाँचों शोबों की मुख़्तसर तशरीह, सुन्नतें और मस्नून दुआऐं)

- ईमानियात
- इबादात
- अख़्लाक़ियात
- मुआ़मलात
- मुआ़शरत
- सुन्नतें
- मस्नून दुआऐं
- मंज़िल



ह़स्बे ईमा ▪ (ह़ज़रत ह़ाजी) शकील अह़मद (साह़ब)
मुजाज़े बैअ़त ▪ ह़ज़रत अक़दस शाह मुफ़्ती मुह़म्मद ह़नीफ़ साह़ब
मुरत्तिब ▪ मुफ़्ती लतीफ़ुर्रह़मान साह़ब

तोहफ़-ए-मोमिन

दीन की अहम मालूमात

हस्बे ईमा

हज़रत हाजी शकील अहमद साहब

दामत बरकातुहुम

मुरत्तिब

मुफ़्ती लतीफुर्रहमान साहब

नाशिर

हिरा पब्लिकेशन मुम्बई

सिलसिल-ए-इशाअ़त

किताब का नाम : तोह़फ-ए-मोमिन

ह़स्बे ईमा : ह़ज़रत ह़ाजी शकील स़ाह़ब

मुरत्तिब : मुफ़्ती लतीफुर्रह़मान साह़ब

तब्अ़े अव्वल 1000

नाशिर : ह़िरा पब्लिकेशन, पनवेल
मुम्बई, इंडिया

मिलने का पता
इदारा-ए-इस्लामियत
३६, मुह़म्मद अ़ली रोड, मुम्बई-३
फोन: **022-23435243**

फेहरिस्ते मज़ामीन

३ मुआ़मलात का बयान

४. मुआ़शरत का बयान

५ अख़्लाक़ का बयान

बिस्मिल्लाहि-र्रह़मानि-र्रह़ीम

अपनी बात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ ـ اَمَّا بَعْدُ

अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन। वस़्स़लातु वस्सलामु अ़ला सैय्यिदिल अम्बियाइ वलमुर्सलीन। अम्मा बाद।

इस्लाम नाम है उस मुकम्मल निज़ामे ह़यात का जो कुरआन और सुन्नत में बयान हुआ है, ख़्वाह उसका ताअ़ल्लुक़ अ़क़ाइद या इ़बादात से हो या मुआ़मलात और मुआ़शरत से, हुकूमत व सियासत से हो या तिजारत व स़नअ़त वग़ैरह से। अल्लाह तआ़ला ने कुरआने करीम में तमाम ईमानवालों से मुतालबा किया है कि तुम सब इस निज़ामे ह़यात में मुकम्मल तौर से दाख़िल हो

जाओ और शैतान की पैरवी ना करो।(मआ़रिफुल कुरआन,जिल्द अव्वल,स़फ़ा ३४४)

इस के बरख़िलाफ़ आज हमारे पास जो दीन है वो इ़बादत की लाईन के चंद आमाल हैं और वो भी बेजान। मुसलमानों का एक बड़ा तबक़ा जो दीन से जुड़ा हुआ है, उस ने भी अपनी दीनदारी को सिर्फ़ इ़बादात तक मह़दूद कर लिया है। नमाज़, रोज़ा और चंद दूसरी इ़बादात को ही मुकम्मल दीन समझ कर, दीन के दूसरे शोअ़बों से ग़ाफ़िल है। ह़ालांकि दीन के दीगर शोअ़बे मस़लन मुआ़मलात,मुआ़शरत और अख़्लाक़ वग़ैरह इस क़दर अहम हैं कि उन के बग़ैर बड़े बड़े इ़बादत गुज़ारों की इ़बादतें कल क़यामत के दिन दूसरों के ह़वाले कर दी जायेंगी और मुआ़मलात व मुआ़शरत को नज़रअंदाज़ करने वाले इ़बादत गुज़ार और खुद को दीनदार समझने वालें,दूसरे गुनाहगारों का बोझ अपने सर पर लिए हुए

जहन्नम रसीद हो जायेंगे। अल्लाह के ह़बीब स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसे ही लोगों को उम्मत का मुफ़्लिस क़रार दिया है। अल्लाह तआ़ला हम सब की इससे हि़फ़ाज़त फ़रमाये।(आमीन)

चुनांचे दीन के पांचो शोअ्बे ईमानियात, इ़बादात, मुआ़मलात, मुआ़शरत और अख़्लाकि़यात की अहमियत और इस सिलसिले में हमारी ग़फ़्लत के पेशे नज़र एक किताब तैयार करने का दिल में दाइ़या पैदा हुआ, तो हम ने अज़ीज़म मुफ़्ति लतीफुर्रह़मान सल्लमहु के साथ मिल कर इन शोअ्बों को क़द्रे तफ़्स़ील के साथ सहल अंदाज़ में तर्तीब दिया। जिस को अ़वाम और बिलखु़सूस़ दीनी दावत के साथियों ने क़द्र की निगाह से देखा। फिर जब हि़रा पब्लिकेशन का कि़याम अ़मल में आया और इस इदारे को मुतअ़द्दिद उ़लमा-ए-किराम और मुफ़्तियाने इ़ज़ाम की

ख़िदमात हासिल हुईं तो इस किताबचे के मसाइल , अहादीस की तख़्रीज और दुआओं का सलीस उर्दू तर्जमा भी कर दिया गया है।जिसके नतीजे मे अल्हम्दुलिल्लाह इज्तिमाई कोशिश और मेहनत की बरकत से अपने मौज़ूअ् पर एक मुफ़ीद किताब तैयार हो गई। दुआ है के अल्लाह तआला मुआविनीन की मसाई-ए-जमीला को क़बूल फ़रमाये और किताब के फ़ाइदे को आम और ताम करे। (आमीन)

शकील अह्मद ,पनवेल

तारीख़ : ८ जमादिल उख़्रा १३३४ हि.

२० एप्रैल २०१३ ई०

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

कामियाबी दीन में ही है

حَامِدًا وَمُصَلِّيًا وَمُسَلِّمًا ۔ اَمَّا بَعْدُ:

हामिदं व मुसल्लियं व मुसल्लिमं । अम्मा बाद।

अल्लाह तआला ने इस दीन को कामिल व मुकम्मल कर दिया है। कुरआने करीम में अल्लाह पाक का इर्शाद है :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۰(المائدة)

तर्जमा: आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी निअ्मत पूरी कर दी और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन बनने के लिए पसंद कर लिया।

अल्लाह पाक ने उम्मते मुहम्मदिया की कामियाबी दीन में रखी है। ज़िंदगी के हर शोअ्बे में अल्लाह के हुक्म और रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़ों के मुताबिक़ चलने का नाम दीन है। और दीन के साथ ज़िंदगी गुज़ारने पर ही दुनिया और आख़िरत की कामियाबी है।

दीन के पांच शोअ्बे

दीन के पांच शोअ्बे हैं:

(१) ईमानियात (२) इ़बादात

(३) मुआ़मलात (४) मुआ़शरत

(५) अख़्लाक़ियात

१. ईमानियात का बयान

अ़क़ाइद तो बहुत सारे हैं और तमाम ही ज़रूरी हैं, जो कुरआन और ह़दीस से स़ाबित हैं, मगर इख़्तेस़ार के पेशे नज़र चंद अ़क़ाइद पेश किए जा रहे हैं। अगर किसी को मज़ीद तफ़्स़ील

देखनी हो तो अकाबिर की इस मौज़ूअ़ पर जो किताबें मौजूद हैं उन्हें देख लें।

अ़क़ीदे की अहमियत

दिल से जिस बात का यक़ीन कर लिया जाए उसे अ़क़ीदा कहते हैं। अ़क़ीदा ही वो चीज़ है जिस पर मौत के बाद की ज़िंदगी का दारोमदार है। अ़क़ाइद अगर स़ह़ीह़ हों तो आख़िरत में नजात हासिल होगी, इसलिए ख़ुद अपने अ़क़ाइद दुरूस्त करना और अपने बच्चों को स़ह़ीह़ अ़क़ाइद समझाना और उन की तालीम देना हर ईमान वाले का सबसे अहम फ़रीज़ा है और उसी में हमारी और हमारी औलाद की भलाई है।

वाज़ेह़ रहे कि अ़क़ीदे के सिलसिले में बुनयादी चीज़ अल्लाह को एक मानना और मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह का

सच्चा और आख़री रसूल मानना है, लिहाज़ा अगर यूं कहे कि मैं अल्लाह को तो माबूदे हक़ीक़ी मानता हुं,लेकिन आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह का नबी या आख़री नबी नही मानता तो वो काफ़िर है। उस की नजात नही होगी। इसी तरह़ अगर कोई शख़्स़ अल्लाह पर भी ईमान लाए और आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नबी और रसूल भी तस्लीम करे लेकिन कुरआन और ह़दीस़ की किसी बात को झुठलाए तो वो भी काफ़िर है। लिहाज़ा जो लोग रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नबी तो मानते हैं लेकिन आख़री नबी नही मानते वो भी काफ़िर हैं,क्योंके ये लोग कुरआन और ह़दीस़ के मुन्किर हैं और कुछ लोग मरने के बाद आख़िरत की ज़िंदगी को भी नही मानते वो भी काफ़िर हैं।

दुआ :

या अल्लाह हमें आ़फ़ियत के साथ ह़क़ दिखलाईए। ह़क़ समझाईए। ह़क़ पर चलाईए। ह़क़ पर जमाईए।

ह़क़ की ह़िफ़ाज़त और उस के फैलाने के लिए हमें क़बूल फ़रमाईए और अहले ह़क़ के साथ हमारा ह़श्र फरमाइए।

आमीन

कुछ इस्लामी अक़ाइद

तमाम ईमानवालों को इन बातों पर इमान लाना ज़रूरी है:

१ अल्लाह एक है, वो किसी का मुहताज नही, ना उसने किसी को जना, ना वो किसी से जना गया, ना उस की कोई बीवी है और ना कोई उस के मद्दे मुक़ाबिल है।

२ इस दुनिया में पहले कुछ नही था अल्लाह तआ़ला के पैदा करने से सब कुछ वुजूद में आया।

३. वो हमेंशा से है और हमेशा रहेगा।

४. कोई चीज़ उसके मिस़्ल नही,वो सब से निराला है।

५. वो इंन्साफ़ वाला, बड़े तह़म्मुल और बर्दाश्त वाला है। इ़बादत की क़द्र करने वाला है। दुआ़ का क़बूल करने वाला है।वो सब पर ह़ाकिम है।

उस पर कोई हाकिम नही उस का कोई काम हिक्मत से खाली नही।

६. वो काम बनाने वाला है, वही ज़िंदा करता है, वही मौत देता है, जो कुछ मौजूद है उसी के इरादे से है। आराम और राहत, दुख-सुख, बीमारी-तन्दुरूस्ती और नफा-नुक़्सान सभी कुछ उसी के इरादे से होता है।

७. हम उसको उस की सिफ़तों से जानते हैं, मख़्लूक़ के ज़रिये उस को पहचानते हैं उस की ज़ात को हम पूरी तरह नही जानते। जहां में जो कुछ होता है उसी के हुक्म से होता है, बग़ैर उसके हुक्म के एक पत्ता भी नही हिल सकता।

८. ना वो सोता है, ना उंघता है और ना इस आलम की हिफ़ाज़त से थकता है। वही सब चीज़ों को थामें हुवे है।

९. कोई चीज़ खुदा के ज़िम्मे वाजिब नही, वो

जो कुछ अपनी मेहरबानी से अ़ता फ़रमाये उस का फ़ज़्ल है। वो जिस को चाहे बख़्श दे और जिस को चाहे सज़ा दे उस को पूरा पूरा इख़्तियार है।

१०. बंदो को अल्लाह तआ़ला ने समझ और इरादा दिया है, जिस से वो गुनाह और स़वाब का काम अपने इख़्तियार से करते हैं। मगर बंदों को किसी काम के पैदा करने की कुदरत नही है। गुनाह के काम से अल्लाह तआ़ला नाराज़ और स़वाब के काम से ख़ुश होता है। सब को ख़ुदा तआ़ला उन के होने से पहले से, हमेशा से जानता है और अपने जानने के मुवाफ़िक़ उस को पैदा करता है।तक़दीर इसी का नाम है और बुरी चीज़ों के पैदा करने में बहुत राज़ हैं जिनको हर एक नही जान सकता।

१२. पैग़म्बरों में बाज़ का मर्तबा बाज़ से बड़ा

है। सब से ज़्यादा मर्तबा हमारे पैग़म्बर **मुहम्मद** सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का है और आप के बाद कोई नया पैग़म्बर नही आ सकता। क़यामत तक जितने आदमी और जिन्नात होंगे आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सबके पैग़म्बर हैं।

१३. हमारे पैग़म्बर **मुहम्मद** स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जागते में जिस्म के साथ मक्का से बैतुल मुक़द्दस और वहां से सातों आस्मानों पर और वहां से जहां तक अल्लाह तआ़ला को मंज़ूर हुवा पहुंचाया और फिर मक्का मुकर्रमा में पहुंचा दिया, इसी को मेअ्राज कहते है।

१४. ख़ुदा तआ़ला के आख़री पैंग़म्बर **मुहम्मद** स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जिन लोगों ने ईमान की ह़ालत में मुलाक़ात किया फिर ईमान पर उनको मौत आई, उनको **'स़हाबी'** कहते हैं। उन के बड़े मर्तबे हैं।उन सबसे मुह़ब्बत और

अच्छा गुमान रखना लाज़िम है। उनमें चार सहाबी ज़्यादा मशहूर और मर्तबे में दूसरे सहाबियों से बड़े हैं। वो चार सहाबी ये हैं:

हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान,हज़रत अली रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन।

१५. सहाबी का इतना बड़ा मर्तबा है कि बड़े से बड़ा वली भी किसी कम दर्जे वाले सहाबी के मर्तबे को नही पहुंच सकता।

१६. जो मुसलमान खूब इबादत करता है, गुनाहों से बचता है और दुनिया से मुहब्बत नही रखता और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुकम्मल इताअत करता है,वो अल्लाह का दोस्त और प्यारा हो जाता है, ऐसे शख़्स को **'वली'** कहते हैं, उस शख़्स से ऐसी बातें ज़ाहिर होने लगती हैं जो औरों से नही हो सकती, इन

बातों को **करामत** कहते हैं।

१७. वली ख़ुदा का कैसा ही प्यारा हो जाए मगर जब तक होश व ह़वास बाक़ी हों उस के लिए शरीअ़त की पाबंदी ज़रूरी है। नमाज़, रोज़ा और कोई इ़बादत माफ़ नही होती। जो गुनाह की बातें हैं, वो उस के लिए जाइज़ नही हो जातीं।

१९. जो शख़्स शरीअ़त का मुख़ालिफ़ हो वो ख़ुदा का दोस्त नहीं हो सकता, अगर उसके हाथ से कोई अचम्भे की बात दिखाई दे तो वो जादू है या नफ़्सानी और शैतानी धंधा। उस से अ़क़ीदत नही रखना चाहिए।

२०. अल्लाह तआ़ला ने कुछ मख़्लूक़ नूर से पैदा कर के उन को हमारी नज़रों से छुपा दिया है उन्हें **'फ़रिश्ता'** कहा जाता है। बहुत से काम उन के ज़िम्मे हैं।वो कभी अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम नही करते जिस काम पर

अल्लाह ने उन्हे लगा दिया है उस में लगे रहते हैं। कुछ मख़्लूक़ अल्लाह ने आग से बनाई है, वो भी हमको नही दिखाई देती, उन को **'जिन्न'** कहते हैं। उन में नेक व बद सभी तरह़ के होते हैं। उनकी औलादें भी होती हैं। उन सब में ज़्यादा मशहूर शरीर **'इब्लीस'** है।

२१. ईमान उसी वक़्त दुरूस्त होता है जब के अल्लाह और उस के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उन की तमाम बातों में सच्चा समझें और उन को मान लें।अल्लाह और उस के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की किसी बात में शक करना उस को झुठलाना, उस में ऐब निकालना और उस का मज़ाक़ उड़ाना इन सब बातों से ईमान की दौलत छिन जाती है।

२२. गुनाह को ह़लाल समझने से ईमान जाता रहता है।

२३. गुनाह चाहे जितना बड़ा हो, जब तक उसको बुरा समझता रहे ईमान नही जाता।अलबत्ता कमज़ोर हो जाता है।

२४. किसी से ग़ैब की बातें पूछना और यक़ीन करना कुफ़्र है।

२५. किसी का नाम लेकर काफ़िर कहना या लानत करना बड़ा गुनाह है। हां यूं कह सकते हैं के ज़ालिमों पर लानत, मगर जिन का नाम ले कर अल्लाह और उस के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लानत की है या उन के काफ़िर होने की ख़बर दी है उन को काफ़िर या मल्ऊन कहना गुनाह नही।

२६. मुर्दे के लिए दुआ़ करने से, कुछ ख़ैरात कर देने से उस को स़वाब पहुंचता है और उस को उस से बहुत फ़ाइदा होता है।

२७. शिर्क और कुफ़्र का गुनाह अल्लाह तआ़ला

कभी माफ़ नही करता और उस के सिवा दूसरे गुनाह जिस को चाहे अपनी मेहरबानी से माफ़ कर देगा।

२८. अल्लाह और उस के रसूल ने दीन की सब बातें बयान फ़रमां दी हैं, अब कोई नई बात दीन में निकालना दुरूस्त नही है, ऐसी नई बात को "**बिदअ़त**" कहते है। बिदअ़त बहुत बड़ा गुनाह है। आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है " जिस ने हमारे इस दीन में कोई नई बात निकाली वो मरदूद है "।

(बुख़ारी:०५५२,मुस्लिम:९८५४,अ़न आइशा रज़ि.)

बिदअ़ती की इ़बादत मक़्बूल नहीं, उसे तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होती।

२९. नुजूमी (ज्योतिषी) वग़ैरह से ग़ैब की बातें पूछना और उस का यक़ीन करना कुफ़्र है।

३०. ग़ैब का ह़ाल सिवाए अल्लाह के कोई नही

जानता, अलबत्ता अल्लाह ने नबियों को बहुत सी ग़ैब की बातें बताईं हैं। हमारे रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने सब से ज़्यादा इ़ल्म दिया और बहुत ज़्यादा ग़ैब की बातों की ख़बर दी, मगर अल्लाह के सिवा किसी को आ़लिमुल ग़ैब कहना दुरूस्त नही है। ग़ैब की सब बातों को अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।(मज़ीद तफ़्स़ील के लिए अ़क़ाइद की बड़ी किताबों का मुतालआ करें)

२. इ़बादात का बयान

दीन के पांच शोअ्बों में से दूसरा शोअ्बा इ़बादात है।

अल्लाह के ह़बीब स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ : شَهَادَةِ اَنْ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ رَمَضَانَ۔

(بخاری:۸،مسلم،۱۲۲،عن ابن عمر)

बुनियल इस्लामु अ़ला ख़म्सिन:शहादति अ-ल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अन्न मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू व इक़ामि-स्स़लाति व ईताइ-ज़्ज़काति वल ह़ज्जि व स़ौमि रमज़ान।

(बुखारी:८, मुस्लिम:१२२, अ़न इब्ने उ़मर)

तर्जमा : इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है : १. इस बात की गवाही देना की अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही है और **मुह़म्मद** स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। २. नमाज़ क़ायम करना ३.ज़कात देना ४. ह़ज

करना ५.रमज़ान के रोज़े रखना।

ये इस्लाम के पांच अरकान और उस के मज़बूत सुतून हैं। जो शख़्स इख़्लास और दिल की सच्चाई के साथ मानेगा और उन के तक़ाज़ों पर अ़मल करेगा अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया और आख़िरत में कामियाब फ़रमायेंगे।

नमाज़ की फ़र्ज़ियत

इस्लाम का अहम रूक्न नमाज़ है, जो तमाम मुसलमान मर्द और औ़रतों पर फ़र्ज़ है। कुरआन और ह़दीस में इस की बड़ी ताकीद आयी है। सूर-ए-रूम में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۝٣١ۙ (روم:٣١)

तर्जमा: नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकों में से मत हो जाओ।

सूर-ए-मरयम में कई अम्बिया अलै.का तज़्किरा फ़रमाने के बाद इर्शाद फ़रमाया :

فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ (مريم ٥٩)

तर्जमा: सो आ गए उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ जिन्होंने नमाज़ों को ज़ाया किया और ख़्वाहिशाते नफ़्स के पीछे पड़े, सो अनक़रीब अपनी गुमराही की सज़ा पायेंगे।

नमाज़ की अहमियत

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया:

قُرَّةُ عَيۡنِيۡ فِي الصَّلٰوةِ

कुर्रतु अ़ैनी फि-स्स़लाति।

तर्जमा : मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है।

(नसाई:३९४०, अ़न अनस)

नमाज़ पर वईद

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया:

وَلَا تَتْرُكَنَّ صَلٰوةً مَكْتُوبَةً مُتَعَمِّداً فَإِنَّ مَنْ تَرَكَ صَلٰوةً مَكْتُوبَةً مُتَعَمِّداً فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ ذِمَّةُ اللهِ.

(मुस्नदे अह़मद:२२०७५, अ़न मुआ़ज़)

तर्जमा: और फ़र्ज़ नमाज़ हरगिज़ जान कर ना छोड़, जो जानकर उस से अल्लाह का ज़िम्मा बरी हो गया। (यानी दुनिया और आख़िरत में उसे अज़ाब,तक्लीफ़ और ज़िल्लत से बचाने की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआ़ला पर नही रही)

नमाज़े बा जमाअ़त की फ़ज़ीलत

जमाअ़त की नमाज़ का स़वाब तन्हा नमाज़ पढ़ने से बहुत ज़्यादा है। आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जमाअ़त की नमाज़ तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ से सत्ताईस दर्जे फ़ज़ीलत रखती है।

(तिर्मिज़ी :२१५, इब्ने माजा:७८९ ,अ़न इब्ने उ़मर)

दूसरी ह़दीस़ में है कि नमाज़ के लिए मस्जिद जाने में हर क़दम पर एक दर्जा बुलंद किया जाता है और एक गुनाह माफ किया जाता है।(बुख़ारी:४७७, अ़न अबी हुरैरह)

तहारत का बयान

गुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं:

(१) इस तरह़ कुल्ली करना की सारे मुंह में पानी पहुंच जाए।

(२) नाक में नर्म हिस़्से तक पानी पहुंचाना।

(३) पूरे बदन पर इस तरह़ पानी बहाना की बाल बराबर भी कोई जगह सूखी ना रह जाए। (फ़तावा आ़लमगीरी : १ १६, दारूल कुतुब अल इ़ल्मिया बैरूत)

गुस्ल में पांच सुन्नतें हैं

(१) दोनों हाथ गट्टों तक धोना।

(२) इस्तिन्जा करना और बदन के जिस हिस़्स़े पर नजासत लगी हो उसे धोना। (३) नापाकी दूर करने की नीयत करना। (४) पहले वुज़ू कर लेना। (५) तीन मर्तबा अपने सर पर पानी डालना इस तौर पर कि पहले सर पर डाले फिर तीन मर्तबा अपने दाहिने कंधें पर, फिर बाऐं कंधे पर, इस तरह़ कि सारे बदन पर पानी पहुंच जाए। (फ़तावा आलमगीरी :१/१६, दारूल कुतुब अल इ़ल्मिया बैरूत)

मूजिबाते गुस्ल

यानी जिन चीज़ों से गुस्ल वाजिब होता है।

(१) जोश के साथ मनी का निकलना ।

(२) मर्द की सुपारी का अंदर चला जाना ।

(३) हैज़ का ख़ून बंद हो जाना ।

(४) निफ़ास का ख़ून बंद हो जाना।

(फ़तावा आ़लमगीरी, जिल्द १, स़फ़ा १७)

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

मिस्वाक आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की महबूब सुन्नत है।

ह़ज़रत अबु दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि :

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया तो मैं ने देखा कि आप अपने हाथ से मिस्वाक

करते हुए " आअ,आअ" कर रहे थे और मिस्वाक आप के मुंह में थी, गोया आप क़ै कर रहे थे।

(बुख़ारी :२४१, बाबु-स्सिवाकि)

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

पर मिस्वाक करना फ़र्ज़ था

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरफ़ुअ़न रिवायत है कि उम्मत के लिए मिस्वाक सुन्नत और हमारे उपर फ़र्ज़ है।

(बैहक़ी :१३०५१,मक्तबा दारूल बाज़,मक्कतुल मुकर्रमा)

ह़ज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अगर मेरी उम्मत पर मशक़्क़त का ख़ौफ़ ना होता तो मैं हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक को लाज़िम क़रार दे देता।

(बुख़ारी:३४७,मुस्लिम:२५२,अ़न अबि हुरैरह)

नमाज़ के स़वाब में सत्तर गुना इज़ाफ़ा

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मिस्वाक करके जो नमाज़ पढ़ी जाती है उस का स़वाब उस नमाज़ के मुक़ाबले सत्तर गुना ज़्यादा मिलता है जो बिला मिस्वाक के पढ़ी जाती है। (मुस्तदरक ह़ाकिम :५१५)

मिस्वाक की सुन्नतें

(१) वुज़ू करते वक़्त मिस्वाक करना सुन्नत है।

(२) मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ाइद ना रखी जाए, शुरू में एक बालिश्त हो तो बेहतर है, कम में भी मुज़ाइक़ा नही, फिर जिस क़द्र छोटी हो कर इस्तेमाल के क़ाबिल रहे, इस्तेमाल की जाए।

(३) मिस्वाक की लकड़ी ऐसी होनी चाहिये कि

मोटाई में कम अज़ कम छोटी उंगली के बक़द्र हो। (फ़तावा जिल्द १, सफ़हा ९)

वुज़ू का बयान

इन आमाल के लिए वुज़ू करना ज़रूरी है:

नमाज़, सज्द-ए-तिलावत, नमाज़े जनाज़ा और कुरआन मजीद को छूना। इन के लिए वुज़ू करना फ़र्ज़ है और तवाफ़े काबा के लिए वुज़ू वाजिब है।

फ़राइज़े वुज़ू

(१) एक मर्तबा मुकम्मल चेहरा धोना (पेशानी के बाल से ठुड्ड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक)। (२) एक एक दफ़ा कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना। (३) एक मर्तबा चौथाई सर का मसह़ करना। (४) एक मर्तबा टख़्नों समेत दोनों पैर धोना।

मज़्कूरा चीज़ें फ़र्ज़ हैं, इन में से एक भी चीज़ छूट जाए या कोई जगह बाल बराबर भी सूखी रह जाए तो वुज़ू नही होगा।

(अल माइदा:६, आलमगीरी:१/५ ७)

नोट :नेल पॉलिश और हर वो चीज़ जो बदन तक पानी पहुंचने से रोक दे उस के लगाने की वजह से वुज़ू नही होगा। इसी तरह़ अगर नाख़ून पर आटा सूख जाए तो वुज़ू नही होगा, ऑ़रतें ख़ास़ इह़तियात रखें।

(तह़्तावी अ़ला मराक़िल फ़लाह़, स़फ़ह़ा ६२,फ़स्ल फ़ी अह़कामिल वुज़ू)

आज कल बाज़ार में केमिकल वाली मेंहदी भी मिल रही है, ऑ़रतें उस के इस्तेमाल करने के सिलसिले में किसी मोअ्तबर आ़लिम से मसअला पूछ लें।

तयम्मुम का बयान

तयम्मुम में तीन फ़र्ज़ हैं:

(१)पाकी हासिल करने की नीयत करना।

(२) दोनों हथेलियों को ज़मीन पर मार कर पूरे चेहरे पर मलना।(३) दोनों हाथों को ज़मीन पर मार कर कुहनियों समेत हाथ पर मलना। (फतावा आ़लमगीरी:२९/१)

तयम्मुम का मस्नून तरीक़ा

तयम्मुम का मस्नून तरीक़ा ये है कि अव्वल नियत करे कि मैं नापाकी दूर करने के लिए तयम्मुम करता हुं, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े और दोनों हाथ मिट्टी या मिट्टी के बड़े ढेले पर मार कर उन्हें झाड़ दे, ज़्यादा मिट्टी लग जाए तो उसे फूंक मार कर उड़ा दे और दोनों हाथों को मुंह पर इस तरह़ फेरे कि कोई जगह बाक़ी न रह जाए, अगर

बाल के बराबर भी जगह छूट जायेगी तो तयम्मुम सहीह़ ना होगा, फिर दूसरी मर्तबा दोनों हाथ मिटटी पर मारे और उन्हें झाड़ कर पहले बाऐं हाथ की चारों उंगलियां सीधे हाथ की चारों उंगलियों के सिरों के नीचे रख कर खिंचता हुआ कुह्नी तक ले जाए, इस तरह़ ले जाने में सीधा हाथ नीचे की जानिब फिर जायेगा, इस के बाद बाऐं हाथ की हथेली सीधे हाथ के उपर की तरफ़ कुहनी से उंगली तक खींचता हुआ लाए और दाऐं हाथ के अंगूठे की पुश्त पर फेरे। इसी तरह़ सीधे हाथ को बाऐं हाथ पर फेरे, फिर उंगलियों का ख़िलाल करे, अगर अंगूठी पहनी हुई हो तो उतारना या हिलाना ज़रूरी है, उंगलियों का ख़िलाल करना भी फ़र्ज़ है। (बदाइउ़-स्सनाइअ:१/१६७)

नोट : वुज़ू और गुस्ल दोनों के तयम्मुम का यही तरीक़ा है।

सुनने वुज़ू

वुज़ू में १६ सुन्नतें हैं

(१)नीयत करना।

(२)बिस्मिल्लाह पढ़ना।(और बाज़ रिवायात में वुज़ू की बिस्मिल्लाह इस तरह़ आयी है

بِسْمِ اللهِ الْعَظِيْمِ ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَام

बिस्मिल्लाहिल अज़ीमि वल्ह़म्दु लिल्लाही अ़ला दीनिल इस्लाम० ।(कन्जुल उ़म्माल : २६९९०,अ़न अ़ली)

(३) पहले तीन बार दोनों हाथ गटटों तक धोना।

(४) मिस्वाक करना।

(५) तीन बार कुल्ली करना।

(६) तीन बार नाक में पानी डालना।

(७) खूब अच्छी तरह़ कुल्ली करना और नाक

में पानी डालना।

(८) दाढ़ी का ख़िलाल करना।

(९) हाथ पांव की उंगलियों का ख़िलाल करना।

(१०) हर उज़्व को तीन बार धोना।

(११) एक बार तमाम सर का मसह़ करना।

(१२) दोनों कानों का मसह़ करना।

(१३) तर्तीब से वुज़ू करना।

(१४) पै दर पै वुज़ू करना यानी एक उ़ज़्व खुश्क ना होने पाए कि दूसरा धो ले। (१५) दाहिनी तरफ़ से शुरू करना। (१६) आ़ज़ाए वुज़ू को रगड़ कर धोना(१७) वुज़ू के बाद कलिम-ए-शहादत पढ़कर ये दुआ़ पढना।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ۔

अल्लाहुम्म-ज्अल्नी मिन-त्तव्वाबीन
व-ज्अ़ल्नी मिनल मुततहि्हरीन० (तिर्मिज़ी:५५)

मुस्तह़ब्बाते वुज़ू

वुज़ू में ६ (छे) चीज़ें मुस्तह़ब हैं:

(१) दाऐं तरफ़ से शुरू करना, बाज़ उ़लमा ने इसे सुन्नतों में शुमार किया है और यही ज़्यादा दुरूस्त है।

(२) गर्दन का मसह़ करना।

(३) वुज़ू के काम को खुद करना।

(४) क़िब्ले की तरफ़ मुंह कर के बैठना।

(५) पाक और उंची जगह पर बैठ कर वुज़ू करना।

मकरूहाते वुज़ू

वुज़ू में छे चीज़ें मकरूह हैं:

१. ज़ोर से चेहरे पर पानी मारना।

२.नापाक जगह पर वुज़ू करना ।(ट्रेन कि बैतुल ख़ला में वुज़ू करने की गुंज़ाइश है)

३. सीधे हाथ से नाक साफ करना और बाऐं हाथ से कुल्ली करना।

४. वुज़ू के दौरान दुनिया की बातें करना।

५. सुन्नत के ख़िलाफ वुज़ू करना।

(६) ज़रूरत से कम या ज़्यादा पानी का इस्तेमाल करना।

(फतावा आ़लमगीरी: १/१२ नूरुल ईज़ाह:९)

नवाक़िज़े वुज़ू

वो चीज़ें जिन से वुज़ू टूट जाता है:

आठ चीज़ें जिन से वुज़ू टूट जाता है उन्हें "नवाक़िज़े वुज़ू" कहते हैं।

(१) पेशाब या पाख़ाना करना या इन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना। (२)

रीह़ यानी हवा का पीछे से निकलना ।(३) बदन के किसी रास्ते से खून या पीप का निकल कर बह जाना, जिसे वुज़ू या गुस्ल में धोना ज़रूरी है,।(४) मुंह भरकर क़ै करना। (५) लेट कर या सहारा लगा कर सो जाना ।(६) बीमारी या किसी और वजह से बेहोश हो जाना। (७) मज्नून यानी पागल हो जाना। (८) नमाज़ में क़हक़हा मार कर हंसना। (फ़तावा आ़लमगीरी:१/१२)

शराइते नमाज़

नमाज़ के बाहर सात फ़राईज़ हैं, जिन्हें शराइते नमाज़ कहते हैं:

(१) बदन का पाक होना। (२) कपड़ों का पाक होना ।(३) जगह का पाक होना।(४) सतर का छुपाना। (५) नमाज़ का वक़्त होना ।(६) क़िब्ले की तरफ़ रूख़ होना।(७) नियत करना। (आ़लमगीरी:६४)

अरकाने नमाज़

नमाज़ के अंदर छे फ़राइज़ हैं जिन्हें "अरकान" कहते हैं :

(१) तक्बीरे तह़रीमा यानी नियत बांधते वक़्त अल्लाहु अकबर कहना। (२) क़ियाम करना।(३) क़िरअत करना। (४) रूकूअ़ करना।(५) एक रकअ़त में दो सज्दे करना।(६) क़अ्द-ए-अख़ीरा में तशह्हुद के बक़द्र बैठना।

वाजिबाते नमाज़ १४ हैं

(१) फ़र्ज़ नमाज़ की पहली दो रकअ़तों को क़िरअत के लिए ख़ास़ करना। (२)फ़र्ज़ नमाज़ की सिर्फ़ पहली दो रकअ़तों और तमाम नमाज़ों की हर रकअ़त में सूर-ए-फ़ातिह़ा पढ़ना।(३)फ़र्ज़ नमाज़ की सिर्फ़ पहली दो रकअ़त में और तमाम

नमाज़ों की हर रकअ़त में सूर-ए-फ़ातिह़ा के बाद एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें पढ़ना।(४)सूर-ए-फ़ातिह़ा को सूरत से पहले पढ़ना।(५)क़िरअत के बाद रूकुअ़ और रूकूअ़ के बाद सज्दे में तर्तीब क़ायम रखना।(६)क़ौमा करना यानी रूकूअ़ से उठकर सीधा खड़ा होना । (७)जल्सा करना यानी दोनों सज्दों के दर्मियान इत्मीनान से बैठना।(८) तादीले अरकान यानी रूकूअ़,सज्दा वग़ैरह को इत्मीनान से अच्छी तरह अदा करना। (९) क़अ़द-ए-ऊला यानी तीन और चार रकअ़त वाली नमाज़ में दो रकअ़त के बाद तशह्हुद की मिक़्दार बैठना।(१०) दोनों क़अ़्दों में तशह्हुद पढ़ना।(११) इमाम को फ़ज्र, मग़रिब, ईशा, जुमा,ईदैन,तरावीह़ और रमज़ान शरीफ़ की वित्रो में आवाज़ से क़िरअत करना, जुह्र, अ़स्र,वग़ैरह नमाज़ों में आहिस्ता पढ़ना।

(१२)लफ़्ज़े सलाम से नमाज़ ख़त्म करना।(१३) वित्र की नमाज़ में कुनूत के लिए तक्बीर कहना और दुआ-ए-कुनूत पढ़ना।(१४)दोनों ईदों में ज़ाइद तक्बीरें कहना। (आलमगीर ७८)

सज्दा-ए- सह्व कब वाजिब होता है

सज्दा-ए-सह्व ६ चीज़ों से वाजिब होता है जब कि ये चीज़ें भूल कर की जाऐं।

(१) किसी फ़र्ज़ में ताख़ीर हो जाने से।(२) किसी फ़र्ज़ को मुक़द्दम यानी पहले कर लेने से।(३) किसी फ़र्ज़ को दोहरा देने से।(४) किसी वाजिब के छूट जाने से।(५) किसी वाजिब में ताख़ीर हो जाने से।(६) किसी वाजिब की कैफियत बदल देने से, मसलन सूर-ए-फ़ातिहा को सूरत के बाद पढ़ना। (मज्मउ़ल अन्हुर फी शरहि मुल्तकिल़ अब्हुर बाबु सुजूदु-स्सह्वि)

जमाअ़त की नमाज़ छोड़ने की गुन्जाइश

जिन ह़ालात (आज़ार) में मस्जिद की जमाअ़त की नमाज़ छोड़ने की गुन्जाइश है वो ये हैं:

(१) लिबास सतरे औ़रत के बक़द्र ना पाया जाना। (२) मस्जिद के रास्ते में सख़्त कचरे का पाया जाना। (३) बारिश का बहुत तेज़ होना। (४) सर्दी का सख़्त होना कि मस्जिद जाने में शदीद तक्लीफ़ हो। (५) मस्जिद जाने में माल और अस्बाब के चोरी होने का ख़ौफ़ हो। (६) मस्जिद जाने में रास्ते पर किसी दुश्मन के मिल जाने का ख़ौफ़ हो ।(७) मस्जिद मे किसी क़र्ज़ ख़्वाह के मिल जाने का ख़ौफ़ हो, और उस से तक्लीफ़ पहुंच जाने का अंदेशा हो, बशर्ते के क़र्ज़ अदा करने की वुसअ़त ना हो। (८) अंधेरी रात

हो कि रास्ता ना दिखाई देता हो, लेकिन अगर रोशनी का सामान मुहय्या हो तो जमाअ़त में शिर्कत करे। (९) रात का वक़्त हो और सख़्त आंधी हो।(१०) किसी मरीज़ की तीमारदारी करता हो कि जमाअ़त में जाने से मरीज़ को तक्लीफ़ पेश आने का ख़ौफ़ हो।(११) खाना तैयार हो और भूक ऐसी लगी हो कि नमाज़ में दिल ना लगने का ख़ौफ़ हो। (१२) पेशाब या पाख़ाने का शदीद तक़ाज़ा हो ।(१३) सफ़र करने का इरादा रखता हो और गाड़ी छूट जाने का अंदेशा हो।(१४) कोई ऐसा आदमी हो कि चल फिर ना सकता हो। (मराक़िल फलाह़)

नमाज़ की सुन्नतों का बयान

नमाज़ में कुल ५१ सुन्नतें हैं।

क़ियाम की ११ सुन्नतें

(१) तक्बीरे तह़रीमा के वक्त सीधा खड़ा होना यानी सर को ना झुकाना।(२) दोनों पैरों के दर्मियान चार उंगल का फास़ला रखना और पैरों की उंगलियां क़िब्ले की तरफ रखना। (३) मुक़्तदी की तक्बीरे तह़रीमा का इमाम की तक्बीरे तह़रीमा के साथ होना।(४) तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना।(५) हथेलियों को क़िब्ले की तरफ़ रखना । (६) उंगलियों को अपनी ह़ालत पर रखना यानी ना ज़्यादा खुली रखना ना ज़्यादा बंद।(७) दाहिने हाथ की हथेली बाऐं हाथ की हथैली की पुश्त पर रखना।(८) उंगलियों और अंगूठे से हलक़ा बना कर गट्टे को पकड़ना।(९) दर्मियानी तीन उंगलियों का कलाई पर रखना।

(१०) नाफ़ के नीचे हाथ बांधना।(११) स़ना पढ़ना। (नूरूल ईज़ह मअ़ल मराक़ी:९४)

क़िरअत की सात सुन्नतें

(१) तअ़व्वुज़ यानी "अऊज़ु बिल्लाहि" पढ़ना।(२) तस्मिया यानी बिस्मिल्लाह पढ़ना।(३) आहिस्ता से आमीन कहना। (४) फज्र और ज़ुह्र में तिवाले मुफ़स्सल यानी "सूर-ए-हुजुरात से सूर-ए-बुरूज" तक, अ़स्र और इ़शा में औसाते मुफ़स्सल यानी "सूर-ए-बुरूज से सूर-ए-लम यकुन" तक और मग़्रिब में क़िसारे मुफ़स्सल यानी "सूर-ए-इज़ा ज़ुल्ज़िलत से सूर-ए-नास" तक की सूरतें पढ़ना। (५) फज्र की पहली रकअ़त को तवील करना ।(६) ना ज़्यादा जल्दी पढ़ना और ना ज़्यादा ठहर कर, बल्कि दर्मियानी रफ़्तार से पढ़ना। (७) फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रकअ़त में सिर्फ़ सूर-ए-फ़ातिह़ा पढ़ना।

(नूरुल ईज़ाह मअ़ल मराक़ी:९४)

रुकूअ़ की आठ सुन्नतें

(१) रुकूअ़ की तक्बीर कहना (२) रुकूअ़ में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ना(३) घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादा रखना(४) पिंडलियों को सीधा रखना(५) पीठ को बिछा देना(६) सर सुरीन को बराबर रखना (७) रुकूअ़ में कम अज़ कम तीन बार सुब्ह़ान रब्बियल अ़ज़ीम कहना (८)रुकूअ़ से उठने में इमाम को "समीअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदह" और मुक़तदी को "रब्बना लकल ह़म्द" और मुन्फरिद को दोनों कहना। (नूरूल ईज़ाह़ मअ़ल मराक़ी:९६)

सज्दे की बारह सुन्नतें

(१) सज्दे की तक्बीर कहना,(२) सज्दे में पहले दोनों घुटनों को रखना, (३) फिर दोनों हाथों को रखना (४) फिर नाक रखना (५)फिर

पेशानी रखना(६) दोनो हाथों के दर्मियान सज्दा करना(७) सज्दे में पेट को रानों से अलग रखना(८) पहलुओं को बाज़ुओं से अलग रखना ९) कुहनियों को ज़मीन से अलग रखना(१०)सज्दे में कम अज़ कम तीन बार "सुब्हान रब्बियल आला" पढ़ना(११) सज्दे से उठने की तक्बीर कहना(१२) सज्दे से उठने में पहले पेशानी फिर नाक, फिर हाथों को फिर घुटनों को उठाना और दोनों सज्दों के दर्मियान इत्मीनान से बैठना।

(नूरूल ईज़ाह़ मअ़ल मराक़ी: ११)

मुस्तह़ब्बाते नमाज़

नमाज़ में पाँच चीज़ें मुस्तह़ब हैं, उनकी अदाईगी से नमाज़ का स़वाब बढ़ जाता है:

(१)तक्बीरे तह़रीमा कहते वक़्त आस्तीनों से दोनों हथेलियाँ निकालना। (२)रुकूअ़ सज्दे में

मुन्फरिद को तीन मर्तबा से ज़्यादा तस्बीह़ कहना।(३)क़ियाम की ह़ालत में सज्दे की जगह पर और रुकूअ़ में क़दमों पर और जल्सा और क़अ़्दे में अपनी गोद पर और सलाम के वक़्त अपने कंधों पर नज़र रखना।(४)जितना हो सके खांसी को रोकने की कोशिश करना। (५)जमाई लेते वक़्त मुंह बंद रखना और खुल जाए तो क़ियाम की ह़ालत में सीधे हाथ और बाक़ी हालतों में बाऐं हाथ की पुश्त से मुंह छुपाना।(नूरूल ईज़ाह़ मअ़ल मराक़ी:१०२)

मक्रूहाते नमाज़

इन की वजह से नमाज़ का स़वाब कम हो जाता है।

(१) सद्ल यानी कपड़े को लटकाना। (२)कपड़ों को मिट्टी से बचाने के लिए रोकना या समेटना। (३) अपने कपड़े या बदन से

खेलना।(४)मामूली कपड़ों में जिन को पहन कर मज्मे में जाना पसंद नही किया जाता, नमाज़ पढ़ना।(५) मुंह में रूपया या पैसा या कोई और ऐसी चीज़ रख कर नमाज़ पढ़ना जिस की वजह से क़िरअत करने में दुश्वारी होती है।(६)सुस्ती और बेपरवाही की वजह से नंगे सर नमाज़ पढ़ना।(७)पाख़ाना या पेशाब की ह़ाजत होने की ह़ालत में नमाज़ पढ़ना।(८)उंगलियां चटख़ाना। (९)बालों को सर पर जमा करके चोटा बांधना। (१०)कंकरियों का हटाना, लेकिन अगर सज्दा करना मुश्किल हो तो एक मर्तबा हटाने में ह़रज नही।(११) मर्दों का सज्दे में कलाईयां ज़मीन पर बिछाना।(१२)किसी ऐसे आदमी की तरफ़ नमाज़ पढ़ना जो नमाज़ी की तरफ़ मुंह करके बैठा हो । (१३)अगली स़फ़ में जगह होते हुए पिछली स़फ़ में खड़ा होना।(१४)कमर या कोख या कूल्हे पर हाथ

रखना।(१५)क़िब्ले की तरफ़ से मुंह फेर कर या सिर्फ़ निगाह से इधर उधर देखना।(१६)कुत्ते की तरह् बैठना यानी राने खड़ी करके बैठना और रानों को पेट से और घुटनों को सीने से मिला लेना और हाथों को ज़मीन पर रख लेना।(१७)बिला उ़ज़्र चहार जानू (आल्ती पाल्ती मार कर) बैठना।(१८)हाथ या सर के इशारे से सलाम का जवाब देना। (१९)क़स्दन जमाई लेना या रोक सकने की ह़ालत में ना रोकना । (२०)आँखों को बंद करना लेकिन अगर नमाज़ में दिल लगाने के लिए बंद करे तो मक्रूह नही।(२१)इमाम का मेह़राब के अंदर खड़ा होना लेकिन अगर क़दम मेह़राब के बाहर हों तो मक्रूह नही।(२२)अकेले इमाम का एक हाथ उंची जगह पर खड़ा होना और अगर उस के साथ कुछ मुक़्तदी भी हों तो मकरूह नही।(२३)चादर

या कोई और कपड़ा इस तरह लपेट कर नमाज़ पढ़ना कि जल्दी से हाथ ना निकल सके । (२४)नमाज़ में अंगड़ाई लेना।(२५)अ़मामे के पेच पर सज्दा करना। (२६)किसी जानदार की तस्वीर वाले कपड़े पर नमाज़ पढ़ना।(२७)जहाँ पर किसी जानदार की तस्वीर हो उस के दाऐं बाऐं और उस के सामने नमाज़ पढ़ना।(२८)आयतों या तस्बीह़ात को उंगलियों पर गिनना।(२९)सुन्नत के ख़िलाफ़ कोई काम करना । (नूरूल ईज़ाह़ मअ़ल मराक़ी:१२४ १३४)

मुफ़्सिदाते नमाज़

इन चीज़ों की वजह से नमाज़ टूट जाती है

(१)नमाज़ की ह़ालत में बात करना, जान कर या भूल कर थोडी़ हो या ज़्यादा।(२)नमाज़ से बाहर वाले किसी शख़्स की दुआ़ पर "आमीन" कहना। (३) किसी दर्द या तक्लीफ की वजह से

कराहना, आह,ऊह या उफ़ करना। (४)कुरआन शरीफ़ देख कर पढ़ना। (५)कुरआन मजीद पढ़ने में ऐसी ग़लती करना कि जिस से मअ्ना बदल जाए।(६)नमाज़ की ह़ालत में कोई ऐसा काम करना जिस की वजह से देखने वाला ये समझे की ये शख़्स़ नमाज़ में नही।(७)नमाज़ पढ़ते हुए कोई चीज़ खा लेना।(८)क़िब्ले की तरफ़ से बग़ैर किसी उ़ज़्र के सीना फेर लेना। (९)नापाक जगह पर सज्दा करना। (१०) नमाज़ में कोई फ़र्ज़ छोड़ देना।(११)इमाम से आगे बढ़ जाना। (१२)सलाम करना।(१३)सलाम का जवाब देना या छींकने वाले को "यरह़मुकल्लाह"कहना।(१४)किसी बुरी ख़बर पर "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"कहना।

(१५) अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक़्मा देना यानी क़िरअत बताना।(१६) सतर

खुल जाने की ह़ालत में एक रूक्न की मिक्दार ठहरना।(१७)दुआ़ में ऐसी चीज़ मॉगना जो आदमियों से मांगी जाती है ,मस्लन "या अल्लाह ! आज मुझे सौ रूपये दे दे''।(१८) बालिग़ आदमी का नमाज़ में क़हक़हा मार कर या आवाज़ से हंसना।(नूरूल ईज़ाह़ मअ़ल मराक़ी :१८८ १२२, आ़लमगीरी: ११९ ११७)

वो अवक़ात जिन में नमाज़ पढ़ना मकरूह है

(१)तुलूअ़े आफ्ताब : सूरज निकलने के वक़्त से उस की रोशनी तेज़ होने तक (यानी तक्रीबन पन्दरह,बीस मिनट का वक़्त होता है)।(२) ज़वाले आफ्ताब : सूरज के आस्मान में बिल्कुल बीच में होने के वक़्त यहां तक की ज़रा ढल जाए।(३) गुरूबे आफ्ताब : सूरज के गुरूब होने के वक़्त । (आ़लमगीरी:१,५८)

इनके अ़लावा दो औक़ात ऐसे हैं, जिन में सिर्फ़ नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मक्रूह है, फ़र्ज़ नमाज़ की क़ज़ा, नमाज़े जनाज़ा और सज्द-ए-तिलावत बिला कराहत जाइज़ हैं।(१) फज्र की नमाज़ के बाद सूरज के निकलने तक।(२)अ़स्र की नमाज़ के बाद सूरज के डूबने तक।

(बुख़ारी :५६१,अ़न अबी सईदुल ख़ुदरी रजि.)

नमाज़ पढ़ने की तर्कीब

नमाज़ पढ़ने के लिए बावुज़ू क़िब्ले की तरफ़ रूख़ कर के ख़ड़ा हो जाए और जो नमाज़ पढ़ना हो उस की नियत दिल में कर ले जैसे फजर की नमाज़ या ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहा हूँ। ये नियत ज़बान से भी करना बेहतर है।

नियत के बाद हाथ कान की लव तक उठा

कर तक्बीरे तह़रीमा ''अल्लाहु अकबर'' कहे और दोनों हाथों को नाफ़ के नीचे बांध ले, फिर स़ना पढ़े ''सुब्ह़ानक-ल्लाहुम्म'',फिर तअ़व्वुज़ पढ़े ''अऊ़जु बिल्लाह'' फिर तस्मिया पढ़े, बिस्मिल्लाह फिर सूर-ए-फातिह़ा पढ़े 'अल्ह़म्दु लिल्लाही रब्बिल आ़लमीन' सूर-ए-फ़ातिह़ा पढ़ने के बाद बिल्कुल आहिस्ता से 'आमीन' कहे फिर 'बिस्मिल्लाहि र्रह़मानि र्रह़ीम' फिर कुरआन की कोई सूरत पढ़े मस़लन 'इन्ना अअ़्तैनाकल कौस़र' फिर अल्लाहु अक्बर कह कर रूकूअ़ में जाऐं।(पहले बड़ी सूरत पढ़े बाद में छोटी सूरत पढ़े)फिर रूकूअ़ की तस्बीह़ 'सुब्ह़ान रब्बियल अ़ज़ीम' कम से कम तीन बार पढ़े फिर 'समीअ़ल्लाहु लिमन ह़मीदह' कहते हुए इत्मीनान से सीधा खड़ा हो जाए,फिर ''रब्बना लकल ह़म्द'' कहे अगर इमाम के पीछे हो तो इमाम के ''समिअ़-ल्लाहु लिमन ह़मिदह''कहने के

बाद“रब्बना लकल ह़म्द’’ कहे फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए सज्दे में जाए और सज्दे की तस्बीह़ ‘सुब्ह़ान रब्बियल अअ्ला’ कम से कम तीन बार पढ़े, फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए दूसरी रकअ़त के लिए सीधा खड़ा हो जाए, फिर इसी तरह़ “बिस्मिल्लाह’’पढ़े सूर-ए-फ़ातिह़ा और कोई सूरत पढ़े मस़लन “कुल हुवल्लाहु अह़द’’इसी तरह़ रकअ़त पूरी कर के क़अ्दे में बैठ जा,फिर तशह्हुद यानी “अत्तह़िय्यातु लिल्लाही’’पढे फिर दरूद शरीफ़ यानी“अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुह़म्मद’’पढ़े फिर दुआ-ए-मास़ूरा यानी “अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी’’ पढ़े। फिर “अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाह’’ कहते हुए पहले दाऐं जानिब फिर बाऐं जानिब सलाम फेरे। इस तरह़ दो रकअ़त नमाज़ पूरी हुई और अगर तीन या चार रकअ़त वाली नमाज पढ़ रहा हो तो

तशह्हुद के बाद फ़ौरन तीसरी रकअ़त के लिए खड़े हो जाए और मज़्कूरा तरीक़े के मुताबिक़ बक़िया नमाज़ पूरी करे। कअ़्दे-ए-अख़ीरा में बैठ जाए और तशह्हुद, दरूद और दुआ-ए-मासूरा पढ़ने के बाद सलाम फेर कर नमाज़ मुकम्मल करे।

(नूरूल ईज़ाह मअ़ल मराक़ी :१०४, १०७)

जुमा के आमाल

जुमा के रोज़ छे आमाल जिन पर अ़मल करने से एक साल के नफ़्ल रोज़ों और एक साल की नफ़्ल नमाज़ों का स़वाब हर हर क़दम पर मिलता है।(१)गुस्ल करना।(२) मस्जिद जल्दी जाना।(३) मस्जिद पैदल जाना।(४) इमाम के क़रीब बैठना।(५) कोई बेकार का काम ना करे। (६) ख़ुत्बा ग़ौर से सुनना।

(अबू दाऊद:३४७)

औ़रतों की नमाज़ में ख़ास़ फ़र्क़

(१)तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त अपने दोनों हाथ कंधे तक उठाए, लेकिन हाथों को दुपट्टे से बाहर ना निकाले।(२)सीने पर हाथ बांधे और सिर्फ़ दाहिने हाथ की हथेली को बाऐं हाथ की पुश्त पर रख दे और दोनों बाज़ुओं को पहलुओं से ख़ूब मिलाए रखे और दोनों पैर के टख़नों को बिल्कुल मिला दे।(३)सज्दे में औ़रत पाँव ख़ड़े ना करे;दोनों पाँव दाहिनी तरफ़ निकाल दे,और ख़ूब सिमट कर और दब कर सज्दा करे के पेट दोनों रानों से और बाहे दोनो पहलुओं से मिला दें।(४) क़अ्दे में जब बैठे तो दोनों पाँव दाहिनी तरफ़ निकाल दे और दोनों हाथों को रान पर रख दे और उंगलियाँ ख़ूब मिला कर रखे।(मराक़िल फ़लाह़, मअ-त्तह़तावी, स़फ़ह़ा २७५ से २७८)

फ़र्ज़ नमाज़ के बाद की दुआऐं

(१)एक मर्तबा अल्लाहु अक्बर और तीन मर्तबा इस्तेग़्फ़ार पढ़ना :

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام۔

(२) अल्लाहुम्म अन्त-स्सलामु व मिन्क-स्सलामु तबारकत या ज़लजलाली वल इकराम।

(मुस्लीम:१३६२)

तर्जमा: ख़ुदाया ! तूही सलामती वाला है, और तेरी ही जानिब से सलामती हासिल होती है, ऐ इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाले। तेरी ज़ात बाबरकत है।

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر۔

३. ला इलाह इल्लल्लाहु वह़दहू ला शरीक

लहू लहुल मुल्कु व लहुल ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

तर्जमा:एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही, उस का कोई साझी नही, मुल्क उसी का है और वो हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है।

اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ۔

४. अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा अ़अ्तैत व ला मुअ़तिय लिमा मनअ़्त व ला यन्फउ़ ज़-लजद्दि मिन्क-ल जद्दु।

तर्जमा: ऐ अल्लाह जो चीज़ तू अता करे उस से कोई रोकने वाला नहीं और जिसको तू रोक दे उसे कोई देने वाला नहीं।और तेरे क़हर से दौलतमंद को उसकी दौलत मंदी भी फाइदा नहीं दे सकती।

५. तस्बिहाते फातिमा पढ़ना।(३३ बार सुब्हानल्लाह, ३३ बार अल्हम्दु लिल्लाहि, ३४ बार अल्लाहु अक्बर)

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ۔

६. अल्लाहुम्म अइन्नी अ़ला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इ़बादतिक।

ऐ अल्लाह ! अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी बेहतरीन इ़बादत की तौफीक़ अ़ता फरमा।

ज़कात का बयान

इस्लाम का तीसरा रूक्न ज़कात है, शरिअ़ते इस्लामिया में ज़कात की भी बहुत बड़ी अहमियत है, अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝٦ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٧

तर्जमा: और ख़राबी है मुश्रिकीन के लिए जो ज़कात अदा नही करते और वो आख़िरत के मुन्किर हैं।

ज़कात ना देने पर वईद

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया: जो लोग ज़कात रोक लेते हैं अल्लाह उन पर क़ह़त की मुसीबत डाल देते हैं।(मुस्तदरक:२५७७)

दूसरी ह़दीस़ में है कि जो लोग ज़कात अदा नही करते हैं, सज़ा में उन से बारिश रोक ली जाती है, अगर जानवर ना हो तो ज़रा भी बारिश ना हो। (इब्ने माजा :४०१९)

ज़कात अदा करने के दुन्यवी फाइदे

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया: जो शख़्स माल की ज़कात अदा करे तो उस का माल शर से दूर हो जाता है।

(स़ह़ीह़ इब्ने खुज़ैमा २३३६)

दूसरी ह़दीस में आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया : अपने माल की ज़कात अदा करने के ज़रिये मह़फ़ूज़ बनाओ और अपने बीमारों का इ़लाज ये करो कि सदक़ा दो और दुआ़ करो और अल्लाह के सामने आ़जिज़ी करने के ज़रिये आने वाली मुसीबतों की मौजों को दूर करो।(मरासीले अबूदाऊद : १, १२८)

ज़कात के चंद ज़रूरी मसाइल

ज़कात किस पर फ़र्ज़ है?

(१)ज़कात फ़र्ज़ होने के लिए बहुत बड़ा मालदार होना ज़रूरी नही। जो औ़रत या मर्द साढ़े बावन तोले चांदी या साढ़े सात तोला सोना या इनमें से किसी एक की क़ीमत के बराबर रूपया रखता हो या तिजारत के माल का मालिक हो तो वो शरिअ़त में मालदार है और उस पर

ज़कात फ़र्ज़ है।(शामी मअ़-द्दुर्र :३ २१०)

(२) किसी के पास कुछ सोना है और कुछ चांदी है या कुछ तिजारत का माल है, किसी का निस़ाब भी पूरा नही लेकिन अगर सब मिला कर देखा जाए और मज्मूअ़े की क़ीमत साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े सात तोला सोने के बराबर हो जाती हो तो उस शख़्स़ पर ज़कात फ़र्ज़ है, अगर उस क़ीमत से कम हो तो फ़र्ज़ नहीं।(शामी मअ़-द्दुर्र ३, २१०)

(३)पहनने के कपड़े,घर का सामान, सवारी की गाड़ी और घर के फर्निचर पर कोई ज़कात फ़र्ज़ नही है। (अद्दुर्र मअ-र्रद ३, १७०)

(४) ज़कात की अदाइगी फ़र्ज़ होने के लिए ये शर्त है के उस माल पर साल गुज़र जाए।जिस के पास साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े सात तोला सोना या उन में से किसी एक की क़ीमत के

बराबर रूपये या तिजारत का माल हो तो उस पर ज़कात अदा करना फ़र्ज़ है। अगर साल पूरा होने से पहले माल जाता रहा तो ज़कात फ़र्ज़ नही होगी।(अद्दुर्र मअ-र्रद:३ १७३)

(५) साल के अंदर अंदर अगर माल घट जाए और साल खत्म होने से पहले ही उतना माल फिर आ जाए के अगर उस को बाक़ी माल में जोड़ दें तो उस ह़द को पहुंच जाता हो जिस पर ज़कात फ़र्ज़ होती है, तब भी ज़कात फ़र्ज़ हो जायेंगी। ग़र्ज़ ये के बीच साल में माल के कम हो जाने से ज़कात माफ नही होती। (आलमगीरी:१ १७५)

ज़कात किस को दें और कैसे दें

(१) ज़कात अदा होने की शर्त ये है कि जिसको ज़कात देना दुरूस्त हो,उसको ज़कात की

रक़म का मालिक बना दिया जाए। ज़कात की रक़म से मस्जिद बनाना,या लावारिस़ मुर्दे के कफ़न में लगाना दुरूस्त नहीं।(अद्दुर्र मअ-र्रद:३,३६३)

(२) माॅ, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी (उपर तक) बेटा, बेटी, पोता, पोती, (जितने दूर तक चले जाएं) उन सब को ज़कात की रक़म देने से ज़कात अदा नही होगी। (हिदाया:१ १८६)

(३)भाई, बहन, भतीजी, भाँजी, चचा, फूफी, ख़ाला, मामू इनको देना दुरूस्त है, बशर्ते के ज़कात के मुस्तहिक़ हों और सय्यद ना हों। (आलमगीरी:१ १९०)

(४)जिस के पास इतना माल ना हो लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा इतना सामान हो जो साढ़े बावन तोला चांदी की क़ीमत का हो सकता है, तो उस को ज़कात देना दुरूस्त नही है, क्योंकि ये शख़्स़ शरीअ़त में मालदार है और जिस की माली

हैसियत इस से कम हो उस को ज़कात दे सकते हैं। बहुत सी औरतें बेवा होती हैं मगर उन के पास इतना ज़ेवर होता है, जिस पर शरीअ़त में ज़कात फ़र्ज़ होती है, उनको ज़कात देने से ज़कात अदा ना होगी।(शामी:३ २६६)

(५) जिस माल पर ज़कात फ़र्ज़ हो,साल पूरा होने पर उस में से पूरे माल का चालीसवां हिस्सा या चालीसवें हिस्से की नक़द क़ीमत अदा करे, यानी सौ रूपये में ढाई रूपया और हज़ार रूपये में पच्चीस रूपये का हिसाब लगा ले।(हिदाया:१ १६५)

(६) ज़कात की नियत के बग़ैर रूपये दे दिए तो ज़कात अदा ना होगी वो नफ़्ली स़द्क़ा हुवा, ऐसा हो जाए तो ज़कात फिर से अदा करे। (हिदाया:१ ,१६८)

(७) शौहर बीवी को और बीवी शौहर को ज़कात दे तो ज़कात अदा ना होगी।(आलमगीरी:१,१८०)

(८) ज़कात की रक़म किसी काफ़िर को नही दी जा सकती।(आलमगीरी: १ १८०)

(९) अगर किसी को हद्ये के नाम से कुछ दिया, मगर दिल में ये नियत है के ज़कात देता हूँ तब भी ज़कात अदा होगी।(आलमगीरी:१ १८९)

रोज़े का बयान

रमज़ान का चौथा रूक्न रमज़ान के रोज़े रखना है। रोज़ा बदनी इ़बादत है, जो पहली उम्मतों पर भी फ़र्ज़ था जैसा के सूर-ए-बक़रा में इर्शाद है:

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ (البقرة١٨٣)

तर्जमा: ऐ ईमानवालों तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए

गए जैसा कि तुम से पहले लोगों पर किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बनो, ये रोज़े चंद दिन के हैं।

रोज़े कि फ़ज़ीलत

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया : जब रमज़ान का महीना आता है तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और बाज़ रिवायात में है कि जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं। (बुखारी: १८९९)

रोज़ा ना रखने पर वई़द

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया : जिस ने रमज़ान में बग़ैर उ़ज़्र और मर्ज़ के एक दिन रोज़ा ना रखा तो सारी उ़म्र रोज़ा रखना भी उस का बदल ना होगा.(बुखारी: ४, १९३)

रोज़े की हिफ़ाज़त ज़रूरी है

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया: जो शख़्स़ रोज़ा रख कर झूठी बात और ग़लत काम ना छोडे, तो अल्लाह को कुछ ह़ाजत नहीं कि वो (गुनाहों को छोड़े बग़ैर) मह़ज़ खाना पीना छोड़ दे।(बुखारी:१९०३)

मालूम हुआ कि खाना पीना और जिन्सी तअ़ल्लुक़ात छोड़ने से रोज़ा कामिल नही होता, बल्कि रोज़े को हर क़िस्म के गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखना लाज़िम है, रोज़े से हो और आदमी बदकलामी करे, ग़ीबत करे, यह उस के लिए मुनासिब नहीं ।

रोज़े के चंद ज़रूरी मसाइल

(१) बग़ैर सह़री के रोज़ा हो जाता है, अलबत्ता सह़री खाना सुन्नत है, अगर ख़्वाहिश

ना हो तब भी पानी पी कर या कुछ थोड़ा बहुत खा कर सुन्नत अदा कर ले।(आ़लमगीरी:१,३००)

(२) इ़त्र या फूल की ख़ूश्बू सूंघना रोज़े में जाइज़ है, लेकिन लोबान, अगरबत्ती वग़ैरह धूनी सुलगा कर अपने इरादे से सूंघना शुरू किया और धुवां हलक़ में चला गया तो रोज़ा टूट जायेगा, बीड़ी, सिगरेट पीने से रोज़ा टूट जाता है।

(क़ाज़ी ख़ान अ़ला हामिशिल हिंदिया १, २०८)

(३) कुल्ली करते हुए अगर पानी हलक़ में चला गया और रोज़ा याद था तो रोज़ा टूट गया और क़ज़ा वाजिब है।(आ़लमगीरी: १,२०२)

(४) नाक की रींट निग़ल जाने और अपने मुंह का बल्ग़म या थूक निग़ल जाने से रोज़ा नही टूटता। (आ़लमगीरी:१,३०२)

(५) रोज़े में नास (सूंघनी) सूंघा या कान में

तेल डाला तो रोज़ा टूट गया, अलबत्ता अगर कान में पानी डाला या खुद से चला गया तो रोज़ा नही टूटेगा। (अद्दुर्र मअ-र्रदः ३,२२७)

(६) किसी को क़ै आ गई फिर अपने इख़्तियार से उसे वापस लौटा लिया तो रोज़ा टूट गया। (क़ाज़ी ख़ान अला हामिशिल हिंदिया १ ,२०४)

(७) अगर जागते में शहवत के साथ मनी ख़ारिज की तो उस से रोज़ा टूट जायेगा। (शामी:३ ,३३१)

(८) रोज़े में मिस्वाक करना, सुरमा लगाना और तेल लगाना दुरूस्त है, हां रोज़े की ह़ालत में मंजन, टूथ पाउडर ,टूथ पेस्ट वग़ैरह से दांत स़ाफ करना मकरूह है।

(अल बहरु-र्राइक़:२,२७९)

ह़ज का बयान

ह़ज इस्लाम का पॉचवा रूक्न है। नमाज़ और रोज़ा बदनी इ़बादत है और ज़कात व स़दक़ा माली इ़बादत है लेकिन ह़ज माली इ़बादत भी है और बदनी इ़बादत भी, इस में पैसा भी ख़र्च होता है और मशक़्क़त भी उठानी पड़ती है। इर्शादे ख़ुदावंदी है:

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾ (آل عمران:۹۷)

तर्जमा: और अल्लाह के वास्ते लोगों के ज़िम्मे

इस मकान का हज करना लाज़िम है, उस शख़्स पर जो कि ताक़त रखे वहां तक रास्ते की,और जो शख़्स मुन्किर हो तो अल्लाह तआ़ला तमाम जहां वालों से ग़नी है।

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि इस्तेताअ़त क्या चीज़ है, जिस की वजह से हज फ़र्ज़ होता है। आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़र्माया: सफरे हज और सवारी। (इब्ने माजा:२८९६)

इस से मालूम हुआ कि मक्का मुअ़ज़्ज़मा तक आने जाने और हज के इख़राजात मिल्कियत में होने से हज फ़र्ज़ हो जाता है।

हज की फ़ज़ीलत

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया गया: कौन सा अ़मल सब से ज़्यादा अफ़ज़ल

है? आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़र्माया: अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाना। अ़र्ज़ किया गया: इस के बाद क्या? फ़र्माया: अल्लाह की राह में जिहाद करना। अ़र्ज़ किया गया फिर क्या? आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़र्माया: वो ह़ज जिस में गुनाह ना किए गए हों और रियाकारी ना हो।

एक ह़दीस़ मे है के आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फर्माया "ह़ज्जे मबरूर की जज़ा जन्नत है"। (बुख़ारी :३१९,अ़न अबी हुरैरह)

ह़ज ना करने पर वई़द

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फर्माया :"जिस को सख़्त मजबूरी या ज़ालिम बादशाह या रोकने वाला मर्ज़ ना रोके और बिला ह़ज किए मर जाए तो चाहे यहूदी होकर मर जाए

और चाहे तो नस्रानी होकर मर जाए।(बैहक़ी ८४४३ ,अ़न अबी उमामा)

खुदा की पनाह ! किस क़द्र सख़्त वईद है। मालूम हुवा के जिन लोगों पर ह़ज फर्ज़ हुवा और उन्होने बग़ैर उ़ज़्र के छोड दिया तो उनके बुरे ख़ात्मे का अन्देशा है।

ह़ज के फ़राइज़

जिस तरह़ नमाज़ में फ़राइज़,वाजिबात और सुनन हैं उसी तरह़ ह़ज में भी हैं। उन्हें नीचे लिखा जाता है,उनको ख़ूब ज़हन नशीं कर लें।

ह़ज में तीन फ़र्ज़ हैं

(१) दिल से ह़ज की नियत करके तल्बिया यानी "लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक" अख़ीर तक पढ़ना इस को एह़राम कहते हैं।(२) नवीं ज़िल हिज्जा को ज़वाले आफ़्ताब से ले कर दसवीं ज़िल

हिज्जा की सुबहे सादिक़ तक अ़रफ़ात में ठहरना अगरचे ज़रासी देर के लिए हो।(३) तवाफ़े ज़ियारत जो वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद किया जाता है।

इन तीनों फ़राइज़ में से अगर कोई भी छूट जाए तो ह़ज ना होगा और उस की तलाफ़ी दम देने(क़ुर्बानी करने) से भी नहीं होगी। (शामी:३ ,४१४,४१५)

ह़ज के वाजिबात

ह़ज के वाजिबात छे हैं:(१) मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ के वक़्त ठहरना। (२) सफ़ा और मरवा के दर्मियान सअ़ी करना। (३) रमी-ए-जिमार यानी कंकरियां मारना। (४) क़ारिन और मुतमत्तेअ़ का क़ुर्बानी करना ।(५) ह़लक़ यानी सर के बाल मुंडवाना या तक़्सीर यानी कतरवाना। (६) आफ़ाक़ी यानी मीक़ात से बाहर रहने वाले को

तवाफ़े विदाअ करना।

नोट : वाजिबाते ह़ज का हुक्म ये है के अगर उन में से कोई वाजिब छूट जाए तो ह़ज हो जायेगा, ख़्वाह क़स्दन छोड़ा हो या भूल कर, लेकिन उस की जज़ा लाज़िम होगी। (अर्र-द्दुल मुख़्तार ४११)

ह़ज की सुन्नतें

(१) मुफ्रिद, आफ़ाक़ी और क़ारिन का तवाफे कुदूम करना।(शामी:३ ४४८)

(२)तवाफ़े कुदूम में रमल और इज़्तेबाअ़ करना। (अगर उसके बाद सअ़ी करना हो। और अगर तवाफ़े कुदूम के बाद सअ़ी ना की तो तवाफ़े ज़ियारत के बाद सअ़ी करनी होगी और उस वक़्त तवाफ़े ज़ियारत में रमल करना होगा)।

(३) आठवीं ज़िल्हिज्जा की सुबह को मिना के

लिए रवाना होना और वहां पांचों नमाज़ें पढ़ना।(मसाइले ह़ज मुकम्मल व मुदल्लल:२८७)

(४) तुलूअ़े आफ़ताब के बाद नवीं ज़िल ह़िज्जा को मिना से अ़रफ़ात के लिए रवाना होना। (ह़वाला-ए-बाला :२८८)

(५) अ़रफ़ात से गुरूबे आफ़्ताब के बाद ह़ज के इमाम से पहले रवाना ना होना।(आ़लमगीरी: १, २३०)

(६) अ़रफ़ात से वापस होकर रात को मुज़दलिफ़ा में ठहरना।(रह़्मतुल्लाहिल वासिआ़:४ २०२)

(७) अ़रफ़ात में गुस्ल करना।
(अलइख़्तियार लितअ्लीलिल मुख़्तार:१६०)

(८) मिना के दिनों में रात को मिना में रहना। (तातार ख़ानिया:३ /५३४)

सुन्नत का हुक्म ये है के उन को क़स्दन तर्क करना बुरा है और उन के अदा करने से स़वाब

मिलता है और उन के छोड़ने से जज़ा लाज़िम नहीं आती है।

एक ज़रूरी तम्बीह

ये चारों चीज़ें (नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात) दीन का एक अहम ह़िस्सा हैं, मुकम्मल दीन नहीं। बुनयादी तौर पर दीन के पॉच शोअ्बे हैं और आदमी मुकम्मल दीनदार उसी वक्त होगा जब उस की ज़िन्दगी में पॉचों शोअ्बे कामिल तौर पर मौजूद होंगे। इस लिए इन शोअ्बों को अपनी ज़िंदगी में लाने की फ़िक्र करनी चाहिए।

३ मुआ़मलात का बयान

अल्लाह पाक ने अपने नबी-ए-करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये जिस तरह उम्मत को अ़क़ाईद व इ़बादात के बारे में हिदायात दी है इसी तरह़ ख़रीद,फ़रोख़्त और तिजारत

वग़ैरह मुआ़मलात के बारे में भी (जो बज़ाहिर इंसान की ख़ालिस़ दुन्यवी ज़रूरत है) हिदायात फ़रमाई है, लिहाज़ा इस शोअ्बे से मुतअ़ल्लिक़ शरीअ़ते मुह़म्मदी की पाबंदी करना भी ऐ़न इ़बादत होगा। इसलिए हर मुसलमान का फ़रीज़ा है कि कमाने में ह़राम व ह़लाल का ध्यान रखे।

इख़्तेस़ार की वजह से हम ने मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ बहुत मोटी-मोटी और अहम बातें लिखने की कोशिश की हैं। हमारे लिए ज़रूरी है कि फ़िक़्ह कि किताबों से ह़लाल पेशे मालूम करें। जो ह़ज़रात तिजारत या मुलाज़मत करना चाहते हैं, वो पहले उस तिजारत व मुलाज़मत का शरई हुक्म उ़लमा-ए-किराम से मालूम कर लें।

कुरआन में अल्लाह का इर्शाद है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ

بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ قف
(النساء:٢٩)

तर्जमा: ''ऐ ईमानवालों! मत खाओ किसी का माल नाहक़ तरीक़े से मगर ये के तिजारत हो आपस में रज़ामंदी से''।

ये आयत दीन के इन्तिहाई अहम रूक्न से मुतअ़ल्लिक़ है और वो अहम रूक्न ''मुआ़मलात की दुरूस्ती और उस की स़फ़ाई''है। यानी इंन्सान का मुआ़मलात में अच्छा होना'' दीन का बहुत अहम बाब है, लेकिन अफ़सोस की बात है कि ये दीन का जितना अहम बाब है, हम ने उतना ही उस को अपनी ज़िदगी से ख़ारिज कर रखा है। हम ने दीन को सिर्फ़ चंद इ़बादात मस़लन:नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात वग़ैरह वज़ाइफ़ और औराद में मुन्ह़सिर कर लिया है, लेकिन रूपये-पैसे के लेन देन का जो बाब है, उस को हम ने बिल्कुल आज़ाद छोड़ा हुआ है, गोया के

दीन से उस का कोई तअ़ल्लुक़ ही नहीं, ह़ालांकि इस्लामी शरीअ़त के अह़काम का जाइज़ा लिया जाए तो नज़र आएगा कि इ़बादात से मुतअ़ल्लिक़ जो अह़काम हैं, वो सिर्फ़ एक चौथाई हैं जबके तीन चौथाई अह़काम मुआ़मलात और मुआ़शरत से मुतअ़ल्लिक़ हैं।

ह़लाल कमाई करना फ़र्ज़ है

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: ह़लाल का तलब करना (नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात वग़ैरह) के फ़रीज़े के बाद फ़र्ज़ है।

(मुस्नदु-श्शिहाब: १२१, अ़न अ़ब्दुल्लाह बिन मसउ़द)

सच्चे ताजिर का दर्जा

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया सच्चा ताजिर और अमानतदार ताजिर कयामत के दिन नबियों,सिददीकों और शहीदों के साथ होगा (तिर्मिजी,१२०९,अन अबी सईद)

य् ताजिरां क् लिए बहुत बड़ी खुशख़बरी ह्। सच्चाई और अमानतदारी का ख़याल रखें तो कस्बे मआ़श के अ़मल में अ़ज़ीम स़वाब पा सकते हैं। इसी तरह़ कुरआन में अल्लाह ने ह़लाल खाने का हुक्म फरमाया है: अल्लाह पाक का इर्शाद है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾ (بقرة ١٧٢)

तर्जमा: ऐ ईमानवालों ! उन पाक चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम को दी हैं और शुक्र करो अल्लाह का अगर तुम उस की इ़बादत करते हो।

इस आयते शरीफ़ा में पाकीज़ा चीज़ों के खाने का हुक्म फ़रमाया है। इसी तरह़ ह़दीस़ में ह़राम माल के वबाल को बयान किया गया है।

ह़राम ग़िज़ा की नहूसत

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद

फ़रमाया: बेशक अल्लाह पाक है और पाक ही क़बूल करता है, आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक ऐसे शख़्स़ का ज़िक्र किया है जो लम्बे सफ़र में हो, बाल बिखरे हुए हों, बदन पर गुबार लगा हुआ हो, आस्मान की तरफ़ हाथ उठा कर "या रब! या रब!" कहता हो और उस का खाना ह़राम हो और पीना ह़राम हो और लिबास ह़राम हो और उस की ग़िज़ा भी ह़राम हो उन सब चीज़ों के बावजूद उस की दुआ़ कैसे क़बूल हो?

(मुस्लिम:२३९३,अ़न अबी हुरैरह)

आजकल बहुत सी दुआ़ऐं माँगी जाती हैं लेकिन दुआ़ऐं क़बूल नही होतीं। लोग शिकायत करते फिरते हैं कि दुआ़ओं का इस क़द्र एहतेमाम किया और इतनी बार दुआ़ की लेकिन दुआ़ क़बूल नहीं होती ? शिकायत करने वालों को चाहिए कि वो अपना ह़ाल देखें और वो अपनी ज़िंदगी का जाइज़ा

लें और हर शख़्स ग़ौर करे कि मैं कितना ह़लाल खाता हूॅ और कितना ह़राम। और जो कपड़े पहनता हूॅ वो ह़राम आमदनी से हैं या ह़लाल आमदनी से?अगर रोज़ी ह़राम है या लिबास ह़राम है तो उस को छोड़ दे,इन्शा अल्लाह दुआ़ ज़रूर क़बूल होगी।

ह़ज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का इर्शाद

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रजि.ने फ़रमाया: अगर तुम नमाज़ पढ़ते-पढ़ते कमान की तरह़ झुक जाओ और रोज़ा रखते-रखते तांत की तरह़ दुबले हो जाओ तो जब तक ह़राम से ना बचोगे,अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल क़बूल नही फ़रमायेगा।

मुत्तक़ी बनने का तरीक़ा

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद

फ़रमाया:बंदा उस वक़्त तक मुत्तक़ी (अल्लाह से डरने वाला) नही बन सकता, जब तक ह़राम से बचने की ख़ातिर ह़लाल से भी ना बचे। (तिर्मिज़ी:२५१८,अ़न ह़सन इब्ने अ़ली रज़ि.)

क़र्ज़ के बारे में तंबीह

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया: क़र्ज़ के अ़लावा शहीद का हर गुनाह बख़्श दिया जाता है। (तिर्मिज़ी:२५१८,अ़न ह़सन इब्ने अ़ली रज़ि.)

तश्रीह़: क़र्ज़ बहुत बुरी बला है। बहुत ही मजबूरी में लिया जाए और जैसे ही इंतेज़ाम हो जाए फ़ौरन अदा कर दे। पैसों की आमद पर अदाइगी मुन्ह़स़िर ना रखे। देखो शहादत कितनी बड़ी नेकी है जान तक दे दी, इससे बढ़कर और क्या होगा; लेकिन हुक़ूकुल इ़बाद फिर भी माफ़ नहीं।जिस किसी का कोई कुछ अपने उपर वाजिब

हो ख़्वाह किसी और सबब से किसी का कोई हक़ वाजिब हो गया हो, उसे जल्दी से अदा कर दे, अपनी इबादतों नमाज़, रोज़ा और ज़िक्र व अज़्कार से धोखा ना खाये।

बाज़ लोग समझते हैं कि हम ने ज़्यादा इ़बादत कर ली है, ह़क़दारों के ह़क़ उस से दे देंगे ये बड़ी नासमझी की बात है। दुनिया में ज़रा सी हक़ीर दुनिया ली और उस के बदले में नमाज़ रोज़े दे कर ख़ुद दोज़ख़ में चले गए। क्या ये समझदारी है ? शेखुल ह़दीस़ मौलाना ज़करिय्या रह. फ़रमाते हैं कि " दो पैसे के बदले सात सौ मक़बूल नमाज़े देनी होंगी''। मज़ीद फ़रमाया कि मैं ने मौलवी नस़ीरूद्दीन (ह़ज़रत शेख़ रह. के कुतुबख़ाने के मैनेजर) से कह दिया है कि लेन देन में हुक़ूक़ की अदाइगी का ख़याल रख। मेरी तो सात सौ नमाज़े मक़्बूल नही हैं। अब तू अपने बारे में

सोच ले कि तेरी कितनी क़बूल हैं''।

सूद से बचो!

जब किसी को क़र्ज़ दे तो जितना क़र्ज़ दिया है उसी क़द्र वसूल करना जाइज़ है। ये तै करना की ज़्यादा लूंगा (चाहे कितना ही कम परसेंट यानी फ़ीसद हो) ये सूद है, जिस का ह़राम होना सब को मालूम है। ह़दीस में इस के बारे में सख़्त वईद ज़िक्र की गई है। आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:जिस इ़लाक़े में सूद और ज़िना आ़म हो जाता है वहां ख़ुदा का अ़ज़ाब उन पर ह़लाल हो जाता है। (मुस्तदरक: २२६१, अ़न इब्ने अ़ब्बास रजि.)

एक और हदीस़ में इर्शाद फ़रमाया : सूद का एक दिरहम जिस को इंसान खा ले और वो जानता है कि ये सूद का है तो छत्तीस मर्तबा ज़िना करने से भी ज़्यादा सख़्त है। (मुस्नदे अह़मद २१९५७)

ह़राम कमाई की चंद सूरतें

ह़राम कमाई की चंद सूरतें तह़रीर की जाती हैं।

वैसे ह़राम के शोअ्बे बहुत हैं हर शख़्स़ अपनी आमदनी और इख़्राजात की फ़िक्र कर ले।

(१) रिश्वत आज-कल बहुत अ़ाम है सब को मालूम है कि रिश्वत ह़राम है।रिश्वत का नाम "हदया" या "तोह़फ़ा" रख लिया जाए तब भी ह़राम ही रहती है।(२) सूद कम हो या ज़्यादा अ़वाम से लीया जाए या किसी भी इरादे से ये सब ह़राम हैं; अगरचे इस का नाम नफ़ा रख लिया जाए। (३) हर वो मुलाज़मत ह़राम है, जिसमें गुनाह किया जाता है; क्योंकि गुनाह करना और गुनाह पर मदद करना दोनों ह़राम हैं।(४) ह़राम चीज़ों की तिजारत ह़राम है और उस पर नफ़ा

भी ह़राम है।मस़लन शराब, ख़िन्ज़ीर,ख़ून, मुरदार गोश्त, तस़्वीरें, मूर्तियाँ इन सब चीज़ों की ख़रीद व फ़रोख़्त ह़राम है और उन की क़ीमत और नफ़ा भी ह़राम है। (५) जितने भी नाजाइज़ टैक्स हैं उन सब का भी वसूल करना ह़राम है। इस सिलसिले की तमाम मुलाज़मतें भी ह़राम हैं और उन की तन्ख़्वाह भी ह़राम है।(६) बीमा पॉलीसी सरासर जुवा है। ज़िंदगी का बीमा हो या माले तिजारत का, कारख़ानों का हो या गाड़ियों का, ये सब ह़राम है और उन में अपनी जमा की हुई रक़म से जो कुछ ज़ाइद मिले वो सब ह़राम है। (७) जितने भी जुवे के तरीक़े हैं जैसे घोड़दौड़ वग़ैरह इन सबकी आमदनी ह़राम है। (८) ग़स़ब, चोरी, डाकाज़नी के ज़रिये जो कुछ हासि़ल किया जाए और लोगों को इग़वा कर के उन पर जो रक़म हासि़ल की जाए वो भी ह़राम है।(९) जो

लोग पीरी मुरीदी का काम करते हैं उन को अहले ह़क़ समझ कर जो कुछ दिया जाता है (ह़ालांकि हक़ीक़त में वो ऐसे नहीं हैं) उन के लिए वो सब ह़राम है।(१०) आजकल उ़मूमन मीरास़ शरिअ़त के मुताबिक़ तक़्सीम नही की जाती। मरने वाले के बेटे अपनी बहनों को और माँओं को मीरास़ नही देते और चूंके मीरास़ तक़्सीम नही होती इस लिए यतीमों के ह़िस़्स़े का माल भी हड़प कर लिया जाता है, जो शरअ़न दूसरों का माल है। उस को अपनी मिल्कियत और काम में लाना ह़राम है, अगरचे देने वाले ने बज़ाहिर किसी दबाव में ख़ामोशी इख़्तियार कर ली हो।

४ मुआ़शरत का बयान

हुक़ूकुल इ़बाद से बेफ़िक्री

हुक़ूकुल इ़बाद का मुआ़मला बहुत अहम है

लेकिन आ़म तौर पर इस की परवाह नही होती। दीनदारी बस नमाज़ और रोज़े की ह़द तक रह गई है। ह़ज़रत सुफ़ियान सौ़री रह़. फ़रमाते थे, अगर कोई शख़्स़ अल्लाह तआ़ला की सत्तर नाफ़रमानियां ले कर क़यामत के मैदान में पहुंचे तो ये उसका हलका जुर्म है बनिस्बत इस के वो किसी बंदे का एक ह़क़ अपने ज़िम्मे ले कर मैदाने क़यामत में ह़ाज़िर हो;क्योंके अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है और बन्दे मोह़ताज हैं, इसलिए उनके हुक़ूक़ का ध्यान रखना और हुक़ूकुल इ़बाद के बोझ से बरी होना निहायत अहम और ज़रूरी है।

मुसलमान किसे कहते है?

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया: मुसलमान वो है जिस की ज़बान और

हाथ से दूसरे मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें।

(बुख़ारी:१०,६११९,अ़न अ़ब्दिल्लाह बिन उ़मर रज़ि.)

बाज़ लोग ये समझते हैं के इस ह़दीस़ में सिर्फ़ मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचानें से मह़फ़ूज़ रखने का हुक्म दिया गया है, लिहाज़ा ग़ैर मुस्लिम को तक्लीफ़ पहुंचाने की मुमानअ़त इस ह़दीस़ में मौजूद नहीं। ह़ालांके ये बात दुरूस्त नहीं, ये हुक्म मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम सब के लिए बराबर है कि अपनी ज़ात से ग़ैर मुस्लिम को भी तक्लीफ़ पहुंचाना जाइज़ नहीं;बल्कि जानवरों को भी तक्लीफ़ पहुंचाना दुरूस्त नहीं। उन की भी रिअ़ायत करना ज़रूरी है। अलबत्ता अगर काफिरों के साथ जिहाद हो रहा हो और जंग की ह़ालत हो तो उस वक़्त तक्लीफ़ पहुंचाना और उन की ताक़त को कमज़ोर करना ना सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मतलूब व मह़मूद है। ये ह़दीस़ दर

हक़ीकत इस्लाम के पॉच शोअ्बों में से एक अहम शोअ्बा ''मुआ़शरत'' की बुनयाद है।

मुआ़शरत का मतलब

मुआ़शरत का मतलब ये है के इस दुनिया में कोई भी इंसान तन्हा नहीं रहता और जब वो दुनिया में रहता है तो उस को किसी ना किसी से वास्ता पड़ता है घर वालों से, दोस्तों से, पड़ोसियों से, बाज़ारवालों से और जिस जगह वो काम करता है वहां के लोगों से। लेकिन सवाल ये है के जब दूसरो से वास्ता पड़े तो उन के साथ किस तरह मुआमला करना चाहिए ? कैसा रवैय्या इख़्तियार करना चाहिए ? इसको मुआशरत के अह़काम कहा जाता है। ये भी दीन का बड़ा शोअ्बा है, लेकिन हमारी नादानी और बे अ़मली की वजह से ये शोअ्बा बिल्कुल नज़रअंदाज़ हो कर रह गया है और उस को दीन का ह़िस्सा ही नही समझा जाता है।

मुआशरत की अहमियत कुरआन में

अल्लाह तआला ने भी मुआशरत के अह़काम बयान करने का एह़तेमाम फ़रमाया है, कुरआन में अल्लाह का इर्शाद है:

يَاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَدۡخُلُوۡا بُيُوۡتًا غَيۡرَ بُيُوۡتِكُمۡ حَتّٰى تَسۡتَاۡنِسُوۡا وَتُسَلِّمُوۡا عَلٰٓى اَهۡلِهَا ؕ (النور۲۷)

तर्जमा: ऐ ईमानवालों! अपने ख़ास़ रिहाइशी मकान के सिवा दूसरों के घरों में दाखिल ना हो यहाँ तक कि उन से इजाज़त तलब करो और उन घरों के रहने वालों को सलाम करो।

जब किसी दूसरे शख़्स़ के घर में जाओ तो अंदर दाखिल होने से पहले इजाजत ले लो के मैं

अंदर आ सकता हूँ के नहीं। इस के अ़लावा कुरआने करीम में सूर-ए-हुजुरात का बहुत बड़ा ह़िस्सा मुआ़शरती अह़काम के बयान पर मुश्तमिल है; लिहाज़ा एक तरफ तो मुआ़शरती अह़काम की इतनी अहमियत है; लेकिन दूसरी तरफ़ रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हम ने इन अह़काम पर अ़मल करना छोड़ दिया है और उन का ज़रा भी ख़याल नहीं रखते।

मुआशरत की अहमियत हदीस में

हज़रत थानवी रह. तहरीर फ़रमाते हैं कि बाज़ लोग अ़क़ाइद व आमाल और मुआ़मलात के साथ अख़्लाक़ की दुरूस्तगी का ख़याल रखते हैं और उस का इ़लाज करते हैं; लेकिन उन्होंने हुस्ने मुआ़शरत को छोड़ रखा है; बल्कि उस को शरीअ़त ही से ख़ारिज समझते हैं। ह़ालांकि मुआ़शरत दीन से कोई अलग चीज़ नही, वो भी

दीन का एक जुज़ है; बल्के जिस तरह़ नमाज़ और रोज़ा फ़र्ज़ है, उसी तरह़ ये भी फ़र्ज़ है। शरीअ़त ने इस का खास़ तौर से एहतेमाम किया है के किसी शख़्स़ की किसी ह़रकत और किसी ह़ालत से दूसरे शख़्स़ को कोई तक्लीफ़ ना हो।(हम यहां ह़दीस़ से इस की दो मिस़ाल देने पर इक्तिफ़ा करते हैं।)

ह़दीस़ में है के आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब छींक आती तो आप अपना मुँह हाथ या कपड़े से ढांक लेते और आवाज़ को पस्त फ़रमाते।

(सुनने कुब्रा, बैहक़ी:३७२३,अ़न अबी हुरैरह रजि.)

इस ह़दीस़ से मालूम हुआ के अपने जलीस (साथ बैठने वाले) की इतनी रिआ़यत करते के उन को आवाज़ की सख़्ती से भी तकलीफ़ ना पहुँचे।

दूसरी ह़दीस़ में आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जब भी मरीज़ की इ़यादत करो तो ज़्यादा ना बैठो। थोड़ा बैठ कर मरीज़ के पास से उठ खड़े हो।

(शोअ़्बुल ईमान, बैहकी: ९२२१ अ़न सई़द बिन मुसय्यिब मुरसलं बिमअ़्नाहू)

इस ह़दीस़ में किस क़द्र बारीक रिआ़यत है; क्योंकि बाज़ औक़ात किसी के बैठे रहने से मरीज़ को करवट बदलने में पांव फैलाने में या बात चीत करने में एक गूना तक्लीफ होती है। अलबत्ता जिस के बैठने से उस को राह़त हो वो इस से मुस्तस़्ना है।(मौसूअ़ह फ़िक़हिय्या, कुवैत: ३-७८)

पहले इन्सान बनो

इसी लिए हज़रत थानवी रह. का एक मशहूर जुमला है के अगर तुम्हें सूफी बनना है या आ़बिद बनना है तो इस मक़्स़द के लिए बहुत सारी

ख़ानक़ाहें खुली हैं, वहां चले जाओ। अगर इंसान बनना है तो यहां आ जाओ इसलिए के यहां तो इंसान बनाया जाता है। और इंसान उस वक़्त तक इंसान नही बनता जब तक के उस को इस्लामी मुआ़शरत के आदाब ना आते हों और उन पर अ़मल ना करता हो।

नोट : ह़ज़रत थानवी रह़. की एक मुख़्तस़र सी किताब है "आदाबुल मुआ़शरत" इस में आप रह़. ने मुआ़शरत के आदाब तह़रीर फरमाये हैं, ये किताब हर मुसलमान को ज़रूर पढ़ना चाहिए।

५ अख़्लाक़ का बयान

अल्लाह तआ़ला ने इंसान को पैदा फ़रमाया और उसे मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम बनाया और दूसरी बहुत सी मख़्लूक़ात पर उसे फ़ज़ीलत बख़्शी और उस के मिज़ाज में उन्स व उल्फत रखी है; इसी लिए इस का नाम 'इंसान' रखा गया है। इंसान

को अपने उल्फ़त वाले मिज़ाज और ज़रूरत व ह़ाजत कि वजह से आपस में एक दूसरे से मिलना जुलना, साथ रहना और एक दूसरे के साथ सफर करना पड़ता है। इसीलिए उसे अच्छे अख़्लाक़ की तालीम दी गई और बुरे अख़्लाक़ से मना किया गया है। तमाम अंबिया अ़लैहिमु-स़्स़लातु वस्सलाम खुश खुल्क़ थे और अल्लाह ने खातिमुल अंबिया अलैहि-स़्स़लातु वस्सलाम को भी ख़ुलुके अ़ज़ीम से नवाज़ा था।चुनांचे इर्शादे खुदावंदी है:

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝۴ (القلم:۴)

तर्जमा : और बेशक आप बड़े अख़्लाक़ पर हैं।

हुस्ने अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया : बिला शुबा क़यामत के रोज़ सब से ज़्यादा भारी चीज़ जो मोमिन के तराज़ू में रखी जाएंगी वो उस का अच्छा अख़्लाक़ होगा। फिर

फर्माया : बिला शुबा बद अख़्लाक़ से अल्लाह को दुश्मनी है। (तिर्मिज़ी:२००२ ,अ़न अबी दर्दा)

बुरे अख़्लाक़ से बचने का हुक्म

आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: आपस में ह़सद ना करो,एक दूसरे को धोके में डालने के लिए भाव मत बढ़ाओ, आपस में बुग्ज़ ना रखो, और एक दूसरे से मुंह ना मोड़ो, और एक शख़्स़ दूसरे शख़्स़ की बैअ़ पर बैअ़ ना करे और अल्लाह के बंदे भाई भाई हो कर रहो। नबी-ए-करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: मुसलमान मुसलमान का भाई है ना उस पर जुल्म करे, ना उस को बे कसी की ह़ालत में छोड़े, ना उससे झूठ बोले, ना उसे ह़क़ीर जाने। इस के बाद तीन मर्तबा अपने मुबारक सीने की तरफ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया: "तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है,तक़्वा

यहां है, इंसान के बुरा होने के लिए यही काफी है के अपने मुसलमान भाई को ह़क़ीर जाने, मुसलमान पर मुसलमान का सब कुछ ह़राम है, उस का ख़ून भी माल भी और आबरू भी''।

(मुस्लिम:६७०६, अ़न अबी हुरैरह रज़ि.)

ज़बान की ह़िफ़ाज़त करना लाज़िम है

इंसान के आज़ा में से एक उज़्व ज़बान भी है आ़म तौर पर दूसरों को तक्लीफ़ ज़बान ही के ज़रिये पहुंचती है। नीज़ ज़बान को दूसरे आज़ा की बनिस्बत ख़ास़ क़िस्म की अहमियत भी ह़ासिल है। आज़ा-ए-इंसानी में 'ज़बान' सबसे अच्छी चीज़ भी है और सबसे बुरी चीज़ भी। इस्लाम का कलिमा उसी से पढ़ा जाता हैं, क़ुरआन की तिलावत उसी से होती है और ख़ैर की दावत भी उसी से दी जाती है । और इस के बरअ़क्स ज़बान ही से कुफ़्र का कलिमा निकलता है, इसी से

गाली दी जाती है, ग़ीबत की जाती है चुग़ली होती है,झूठ बोला जाता है; इसलिए ज़बान की हिफ़ाज़त की बहुत ज़रूरत है।

हज़रत सुफ़ियान सक़्फ़ी रजि.फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आप को मेरे बारे में सबसे ज़्यादा किस चीज़ का ख़ौफ़ है? आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ी और फ़रमाया: सबसे ज़्यादा इस का ख़ौफ़ है। (तिर्मिज़ी:२४१०)

ज़बान की मुसीबतें

ज़बान की मुसीबतें बहुत हैं, यहां इख़्तेसार (शॉर्ट) की ग़र्ज़ से हम सिर्फ़ उस की फेहरिस्त लिखते हैं। ज़बान की मुसीबतों में ये चीज़े आती हैं: (१)झूठ बोलना(२)लानत करना(३) चुग़ली

करना(४)गाली देना(५)ग़ीबत करना(६)किसी का मज़ाक़ उड़ाना(७)झूठा वादा करना(८)झूठी क़सम ख़ाना(९)झूठी गवाही देना (१०) दूसरों को हंसाने के लिए झूठी बातें करना(११)गाना गाना(१२)किसी के मुंह पर तारीफ़ करना(१३) झूठी तारीफ़ करना (१४) काफ़िर या फ़ासिक़ की तारीफ़ करना (१५) झगड़ा करना (१६) गंदी बातें करना (१७) किसी मुसलमान को काफ़िर कहना (१८) किसी की मुसीबत पर ख़ुशी ज़ाहिर करना (१९) किसी की नक़ल उतारना (२०) ताना ज़नी करना (२१) अल्लाह के अ़लावा किसी और की क़सम खाना मसलन माँ की क़सम, कुरआन की क़सम वग़ैरह।

इस्लाहे अख़लाक़ की ज़रूरत

अच्छे अख़्लाक़

अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह के क़रीब हो

जाओ तो नौ चीज़ों को अपने अंदर पैदा करो: (१)स़ब्र (२)शुक्र (३)क़नाअ़त (४)इ़ल्म (५)यक़ीन (६)अपने आप को अल्लाह के सिपुर्द कर देना (७) तवक्कुल (८)रज़ा (९)तस्लीम (मान लेना)।

बुरे अख़्लाक़

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा दिल आईने की तरह़ स़ाफ़ हो जाए तो इन दस चीज़ों को सीने से निकाल दो : (१)लालच (२)लंबी उम्मीदें (३)गुस़्स़ा (४)झूठ (५)ग़ीबत (६)ह़सद (७)कंजूसी (८)दिखलावा (९)तकब्बुर (१०)कीना।

सुन्नतों का बयान

सुन्नत की बरकत

ह़दीस़ में है कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया: “ जिस शख़्स़ ने मेरी

सुन्नत की हिफ़ाज़त की तो अल्लाह तआ़ला चार बातों से उसका इकराम करेगा''

(१)नेक लोगों के दिलों में उसकी मुहब्बत पैदा करेगा(२)फाजिर और बदकार लोगों के दिलों में उस की हैबत पैदा करेगा(३)रिज़्क़ में वुसअ़त देगा(४)दीन में पुख़्तगी नसीब फ़रमायेगा.(तफ़्सीरे हक़्क़ी: सूरए निसा,:६५)

सोकर उठने की सुन्नतें

(१)नींद से उठते ही दोनों हाथों से चेहरा और आँखों को मलना।(२) तीन बार अल्ह़म्दु लिल्लाह कहकर कलिमा-ए-तैयिबा पढ़ना।(३) सो कर उठने की दुआ़ पढ़ना:

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَااَمَاتَنَا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ۔

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़्याना बअ़्द मा

अमातना व इलैहिन्नुशूर। (अबू दाऊद : ५०५१, अ़न,हुज़ैफ़ा)

तर्जमा: तमाम तारीफें उस अल्लाह की हैं, जिस ने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ उठना है।

(४) मिस्वाक धो कर करना ।

(अबूदाऊद:५२,५६, बाबु ग़स्लि-स्सिवाकि)

(५)बरतन में हाथ डालने से पहले तीन मर्तबा अच्छी तरह़ हाथों को धोना।

(अबू दाऊद:१०५,अ़न अबी हुरैरह)

बैतुल ख़ला की सुन्नतें

(१) सर ढाँक कर जाना ।

(अलमुग्नी लिइब्ने कुदामा ह़ंबली:१-१२३)

(२)जूता या चप्पल पहनकर जाना।

(ह़वाला-ए- साबिक़)

(३)जाने से पहले अंगूठी या किसी चीज़ पर

कुरआन शरीफ की आयत या हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मुबारक नाम लिखा हो और वो दिखाई देता हो तो उस को उतार कर जाना। (अल-फ़िक़्हुल ह़नफ़ी फी स़ौबिहिल जदीद:१-६२)

(४)दुआ़ पढ़कर अंदर जाना। (आ़लमगीरी:१-५०)

दुआ़ ये है:

بِسْمِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ.

बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ू बिक मिनल ख़ुबुसि़ वल ख़बाईस़''। (तिर्मिज़ी, ६०६)

''मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ ख़बीस़ जिनों और जिनियों से'' ।(अबूदाऊद :६,४,इब्ने माजा:२९८)

अगर सि़र्फ़ बिस्मिल्लाह कहे तो भी काफ़ी है। बेहतर ये है के पहले बिस्मिल्लाह कहे फिर दूसरी दुआ़ भी शामिल कर ले।

(५)पहले बायां पॉव अंदर रखना और क़दमचे

पर सीधा पैर रखना और उतरने में बायां पैर क़दमचे से नीचे रखना।

(अल-फ़िक़्हुल ह़नफ़ी फी स़ौबिहिल जदीद:१-६३)

(६)सतर खोलते वक़्त आसानी के साथ जितना नीचा होकर खोल सके उतना नीचा होकर खोलना।(तिर्मिज़ी:१४,अ़न इब्ने उ़मर रज़ि.)

(७) क़िब्ले की तरफ ना मुंह करना और ना पीठ करना।(बुख़ारी:३८६,अ़न अबी अय्यूब अंस़ारी रज़ि.)

(८)बिला सख़्त ज़रूरत के बात ना करना, इसी तरह़ अल्लाह का ज़िक्र ना करना।

(बुख़ारी:३८६ अ़न अबी अय्यूब अंस़ारी रज़ि.)

(९) खड़े होकर पेशाब ना करना।

(नसाई:२९ अ़न आ़येशा रज़ि.)

(१०) पेशाब और पाख़ाने के छींटों से बहुत बचना।(दार कुत्नी : ७ अ़न अबी हुरैरह)

(११) बाए हाथ से इस्तिंजा करना।

(दार कुत्नी : अ़न अबी हुरैरह)

(१२) इस्तिंजा के बाद मिटटी या साबुन से अच्छी तरह़ हाथ धो लेना।(ह़वाला-ए-बाला)

(१३) क़दमचे से बायां पांव हटाना और दाऐं पांव से बाहर आना, बाहर आने के बाद दुआ़ पढ़ना।

(अलफ़िक़्हुल ह़नफ़ी फी सौबिहिल जदीद:१-६३)

दुआ़ ये है:

غُفْرَانَكَ

(१) गुफ्रानक ।

तर्जमा: ''ऐ अल्लाह! मैं तेरी बख़्शिश चाहता हूँ''। (तिर्मिज़ी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَذْهَبَ عَنِّى الْاَذٰى وَعَافَانِىْ۔

(२) अल्ह़म्दू लिल्लाहिल्लज़ी अज़हब अ़न्निल अज़ा व आ़फानी।

तर्जमा: “तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं ,जिस ने मुझ से तक्लीफ़ दूर की और मुझे आ़फ़ियत दी’’।

(इब्ने माजा:३०१, अ़न अनस बिन मालिक रज़ि.)

नोट: ह़ज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रह़मतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं के पहले (पहली ह़दीस़ की दुआ़) गुफ़्रानक पढ़े और उस के बाद,बाद की दुआ़ पढ़े।

गुस्ल की सुन्नतें

(१)दोनों हाथ गट्टों तक धोना।

(आ़लमगीरी:१-१४)

(२) इस्तिन्जा करना और जिस जगह बदन पर नजासत लगी हो, उसे धोना।

(३)नापाकी दूर करने की नियत करना।

(आ़लमगीरी:१-१४)

(४) पहले वुज़ू करना।

(५) तीन मर्तबा अपने दाहिने कंधे पर पानी डाले, फिर तीन मर्तबा बाऐं कंधे पर फिर अपने सर पर तीन मर्तबा पानी डाले, इस तरह़ कि सारे बदन पर पानी बह जाए।

(आ़लमगीरी:१-१४,अलफिक़्हुल ह़नफ़ी फ़ी सौ़बिहिल जदीद:१-१०७)

बालों की सुन्नतें

(१)बालों की लंबाई कानो के दर्मियान तक या कानों तक या कानों की लौ तक रखना।(अबू दाऊद:४१८७, ४१८८,४१८९, अ़न अनस व आ़इशा रज़ि.)

(२)सारे सर के बाल रखना या सारा सर मुंडवाना, सिर्फ़ एक हिस्से के बाल मुंडवाना या तरशवाना दुरूस्त नहीं है।

(अबू दाऊद:४१९५, ४१९७,अ़न इब्ने उ़मर रज़ि.)

(३)दाढ़ी को दाऐं-बाऐं और लंबाई में एक मुश्त रखना और मूंछों को कम करना।

(शामी,२,११३)

(४) मुंछों को कतरवाने में मुबालग़ा करना।

(ह़वाला- ए - साबिक़)

(५)ज़ेरे नाफ़, बग़ल और नाक के बाल काट लेना।(मुस्लिम:२५७,बाबु ख़िसालिल फ़ित्‌रति)

(६)बालों को धोना, तेल लगाना और कंघा करना।(अलमौसूअ़तुल फ़िक़हिया:२६,११९,)

(७)जब तेल डालने का इरादा हो तो बाऐं हाथ की हथेली पर तेल ले कर पहले अबरूओं पर फिर आंखों की पलकों पर, फिर सर में तेल डालना।

(८) दाऐं जानिब से कंघी करना।

(मौसूअह,कुवैत: ११,१८०)

(९) आईना देखने की दुआ़ पढ़ना, दुआ़ ये है:

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ،فَحَسِّنْ خُلُقِیْ۔

अल्लाहुम्म अन्त ह़स्सन्त ख़ल्की फह़स्सिन ख़ुलुक़ी०

"ऐ अल्लाह! जिस तरह़ तूने मेरी ज़ाहिरी सूरत अच्छी बनाई उसी तरह़ मेरी अंदरूनी सूरत व ह़ालत अच्छी बना।"

(सिलाहुल मोमिन फी-द्दुआ व-ज़्ज़िक्र:८७९)

लिबास की सुन्नतें

(१)सुफ़ेद रंग का कपड़ा पहनना।(मुस्नदे अबू यअ्ला अल मूसिली :२४१०, अ़न इब्ने अ़ब्बास)

(२)क़मीस़, कुर्ता या स़दरी वग़ैरह पहने तो पहले दायां हाथ आस्तीन में डालना, फिर बायां हाथ। इसी तरह़ पाजामा और शलवार के लिए पहले दाहिना पांव फिर बायां पांव डालना। (बुख़ारी:५५१६, अ़न आ़इशा रज़ि.)

(३) पाजामा, शलवार या लुंगी, टख़ने से उपर रखना।

(बुख़ारी:५४५, अ़न अबि हुरैरह)

(४)कपड़े पहनने की दुआ पढ़ना:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ.

अल ह़म्दु लिल्लाहिल्ज़ी कसानी हाज़ा व रज़क़नीहि मिन ग़ैरि ह़ौलि-म्मिन्नी वला कुव्वतीन।

"अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे ये लिबास पहनाया, और बग़ैर मेरी ताक़त व कुव्वत के मुझे ग़ैब से ये अ़ता फ़रमाया"। (अबू दाऊद: ४०२५)

(५) नया कपड़ा पहने तो ये दुआ पढ़ना:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَأَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَيَاتِیْ.

अल ह़म्दु लिल्लाहि-ल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औ़रती व अतजम्मलू बिहि फी ह़याती।

"खुदा का शुक्र है जिस ने मुझे वो (लिबास) पहनवाया जिस से मैं अपना सतर ढांकता हूँ और जिंदगी में आरास्तगी हासिल करता हूँ।(तिर्मिज़ी:३५६, इब्ने माजा:३५५७)

(६) अ़मामा बांधना।

(मुअ्जमे कबीर:१३४१८, अ़न इब्ने उ़मर)

(७) शमला छोड़ना।

(८) अ़मामे के नीचे टोपी रखना।

(मुअ्जमे कबीर:१३४१८, अ़न इब्ने उ़मर)

(९)कपड़े उतारते वक़्त :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ۔

"बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुव" कहना।(अ़मलुल यौमि वल्लैलह:२७३, अ़न अनस)

और इब्तेदा बाऐं जानिब से करना, क़मीस़ या कुर्ता वग़ैरह उतारना हो तो पहले बायां हाथ

आस्तीन से निकालना फिर दायां हाथ। इसी तरह़ शल्वार और पाजामा उतारते वक़्त पहले बायां पांव बाहर निकालना फिर दायां पैर निकालना, पाजामा बैठ कर पहनना और बैठ कर कुर्ता उतारना।

(नसाई:११२,अ़न आ़इशा रज़ि., बाबु बिअय्यि-र्रिज्लैनि यब्दउ बिल ग़ुस्ल)

(१०)जूता पहले दाऐं पॉव में पहनना ।(बुख़ारी: ५८५६)

(११)उतारते वक़्त पहले बाऐं पॉव से उतारना।(हवाला-ए- साबिक़)

(१२)नया जूता पहन कर यह दुआ पढ़ना:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهٖ وَخَيْرِ مَاهُوَ لَهٗ

وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَاهُوَ لَهٗ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन ख़ैरिही व

ख़ैरी मा हुव लहु व आउज़ु बिक मिन शर्रिही व शर्रि मा हुव लहु। (अ़मलुल यौमि वल्लैलह: १४, बाबु मा यक़ूलु इज़ा लबिस सौबहू, हि़स्ने ह़सीन १६६)

तर्जमा: ख़ुदाया! मैं तुझ से इस की भलाई और जिस ग़र्ज़ के लिए (बनाया गया) है उस की भलाई तलब करता हूँ और इस की बुराई से और जिस ग़र्ज़ के लिए (बनाया गया) है उस की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ।

घर से निकलने और मस्जिद जाने की सुन्नतें

(१)घर वालों को सलाम करके निकलना।

(मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ :१९४५ बाबु-त्तस्लीमि इज़ा ख़रज मिन बैतिं)

(२)दुआ पढ़ना:

بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ

اِلَّا بِاللّٰہِ۔

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़ल-ल्लाहि वला ह़ौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि।

तर्जमा: अल्लाह के नाम के साथ मै अल्लाह अ़ज़्ज व़ जल्ल पर भरोसा करता हूँ। किसी भी शर और बुराई से बचना और किसी भी नेकी या ख़ैर का हासिल होना अल्लाह की मदद के बग़ैर मुम्किन नहीं। (अबू दाऊद:५०९७)

(३) वुज़ू सुन्नत के मुताबिक़ घर पर करना।

(४) सुन्नतें घर पर पढ़ कर जाना मौक़ा ना हो तो मस्जिद में पढ़ना।

(बुख़ारी:६११३, बाबु मा यजूज़ु मिनल ग़ज़बि व-श्शिद्दति लिअम्रिल्लाह)

(५) इत्मीनान से जाना, दौड़ कर ना जाना।

(मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक,३४१२ बाबुल मश्ई इल-स्स़लाति)

(६)निगाह नीची रखना।

(ये रास्ता चलने की आ़म सुन्नत है)

मस्जिद में दाख़िल होने की सुन्नतें

(१)दायाँ पाँव मस्जिद में दाख़िल करना।

(२) بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि पढ़ना.

(इब्ने माजा:७७१, अ़न फातिमा रज़ि.)

(३) दुआ़ पढ़ना:

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्लाहुम्म-फ़्तह़ली अब्वाब रह़मतिक

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मेरे लिए अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दीजिए।

(४) ऐतेकाफ की नियत करना।

(अल फ़िक्हुल ह़नफ़ी:५-४१८)

अज़ान व इक़ामत की सुन्नतें

(१) अज़ान व इक़ामत क़िब्ला रू कहना। (हिदाया: १-७२)

(२)अज़ान के अल्फ़ाज़ ठहर ठहर कर अदा करना और इक़ामत के अल्फ़ाज़ जल्दी जल्दी अदा करना।(हिदाया:१-७०)

(३)अज़ान में ''ह़य्य अ़ल-स़्स़लाह'' और ''ह़य्य अ़लल फलाह़'' कहते वक़्त दाऐं और बाऐं जानिब मुंह फेरना; लेकिन सीना और क़दम क़िब्ला रूख़ रखना।(आ़लमगीरी:१-५६)

(४)अज़ान के वक़्त तिलावत, ज़िक्र और तस्बीह़ वग़ैरह बंद कर देना और अज़ान का जवाब देना और जब मुअ़ज़्ज़िन ''ह़य्य अ़ल-स़्स़लाह'' और ''ह़य्य अ़लल फ़लाह़'' कहे तो जवाब में ''ला ह़ौल वला कुव्वत इल्ला

बिल्लाह''कहना।(आलमगीरी:१-५७)

(५) फ़ज्र की अज़ान में अस्सलातु ख़ैरूम मिन-न्नौम के जवाब में "स़दक़्त व बररत" कहना।(आलमगीरी:५६)

(६) इक़ामत का जवाब भी अज़ान की तरह़ देना, लेकिन "क़द क़ामति-स्सलाह" के जवाब में "अक़ामह-ल्लाहु व अदामहा" कहना।(आलमगीरी: ५६)

(७) अज़ान ख़त्म होने के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ना।(मुस्लिम शरीफ़, बाबुल अज़ान, मिश्कात शरीफ़ मअ मिरक़ात: २-३२८)

(८) दरूद शरीफ़ के बाद ये दुआ पढें:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ

وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَا نِ الْوَسِيْلَةَ

وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدتَّهٗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادِ.

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहि द्दअ्वती-त्ताम्मति वस़्सलातिल क़ाईमति आति मुहम्मद नि-ल वसीलत वल फज़ीलत वब्अ़स्हू मक़ामम-मह़मूदनि-ल्लज़ी व अ़त्तहू इन्नक ला तुख़्लिफुल मीआ़द। (बुख़ारी:६१४,सुनने बैहक़ी कुब्रा १७९)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! इस पूरी (व कामिल) दुआ़ और अदा की जाने वाली नमाज़ के परवरदिगार ! मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वसीला और फ़ज़ीला अ़ता कर और उन को मक़ामें मह़मूद में पहुंचा, जिस तरह़ तूने वादा किया है । बेशक तू वादा ख़िलाफ़ी नही करता।

मस्जिद से निकलने कि सुन्नतें

(१) बायां पैर मस्जिद से निकालना।

(२) बिस्मिल्लाह पढ़ना ।

(३) दरूद शरीफ़ पढ़ना,मस़लन:

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ۔

बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाह

(४)اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक मिन फ़ज़्लिक०

(मुस्लिम:७१३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मै तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ।

सीढ़ी से नीचे उतरना हो तो सुब्ह़ानल्लाह और ऊपर चढ़ना हो तो अल्लाहु अक्बर पढ़ना।

(अबूदाऊद:३५०, तिर्मिजी:२-१८२ अज़्कार:५३८)

घर में दाख़िल होने की सुन्नतें

(१) सलाम करना। (२) इजाज़त चाहना। (३)दरवाज़े के दाऐं या बाऐं जानिब खड़े रहना। (४) घर में दाख़िल होने की दुआ पढ़ना:

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰہِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰہِ خَرَجْنَا وَعَلَی اللّٰہِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक खैरल मौलजि व ख़ैरल मख़्रजि बिस्मिल्लाहि वलज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अ़लल्लाहि रब्बिना तवक्कलना।

(अबूदाऊद: ५०९८)

तर्जमा: खुदाया ! मैं तुझ से अंदर आने और बाहर जाने की बेहतरी तलब करता हूँ। अल्लाह के नाम से हम दाखिल हुए और अल्लाह के नाम से हम निकले और उसी पर जो हमारा

परवरदिगार है भरोसा किया।

खाने की सुन्नतें

(१)दस्तरख़्वान बिछाना।

(बुख़ारी बह्वाला मिश्कात,स़फ़ा:३६३)

(२)दोनों हाथ गट्टों तक धोना और ना पोछना। (हिंदिया:५-२३७)

(३)बिस्मिल्लाह पढ़ना बुलंद आवाज़ से।

(मुत्तफ़क़ अ़लैह, बह्वाला मिश्कात:३६३)

(४) सुन्नत तरीक़े के मुताबिक़ बैठना, एक ज़ानू या दो ज़ानू बैठना। (बुख़ारी बह्वाला मिश्कात स़फ़ा:३६३)

(५)दाऐं हाथ से खाना। (मुस्लिम, बह्वाला मिश्कात:३६३)

(६)अपने सामने से खाना।

(मुत्तफ़क़ अ़लैह बह्वाला मिश्कात:३६३)

(७)तीन उंगलियों से खाना।

(मुस्लिम बह़वाला मिश्कात:३६३)

(८)टेक लगा कर ना खाना।

(बुख़ारी बह़वाला मिश्कात: ३६३)

(९)खाने में ऐ़ब ना निकालना।

(बुख़ारी ३५६३, अ़न अबी हुरैरह रज़ि.)

(१०)अगर लुक़्मा हाथ से गिर जाए तो उठा कर खा लेना। (मुस्लिम:२०३३)

(११)बहुत ज़्यादा गरम ना खाना।

(मुस्लिम,बह़वाला मिश्कात:३६३)

(१२)बर्तन और उंगलियों को चाट कर स़ाफ करना। (मुस्लिम,बह़वाला मिश्कात::३६३)

(१३)ख़ाने की मज्लिस में जो शख़्स़ सब से ज़्यादा बुजुर्ग और बड़ा हो उस से खाना शुरू करना। (मुस्तदरक:७०९२)

(१४) जूता उतार कर रखना।

(१५) पहले दस्तरख़्वान उठाना फिर ख़ुद उठना।

(१६) दस्तरख़्वान उठाने की दुआ़ पढ़ना:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْداً كَثِيْراً طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مُكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا ۔

अल–ह़म्दु लिल्लाहि ह़म्दन कसी़रन तयि्यबं मुबारकं फीहि ग़ैर मुक्फीयि्यन व ला मुवद्दइ़ं वला मुस्तग़्नियं अ़न्हू रब्बना।

तर्जमा: तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, (ऐसी तारीफ़) जो बहुत ज़्यादा, पाकीजा़ और बाबरकत है, जिसे काफ़ी ना समझा गया हो (के मज़ीद की ज़रूरत ना हो)ना छोड़ा गया हो और ना उस से बेपरवाही की गई हो , ऐ हमारे रब! (हमारी ह़म्द क़बूल फ़रमा)

(बुख़ारी: ५४५८, बाबु मा यकूलु इज़ा फरग़ मिन तआ़मिही)

(१७) अगर शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो:

بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ۔

बिस्मिल्लाहि अव्वलहु व आख़िरहू पढ़ना ।

(अबूदाऊद: ३७६९०)

(१८) जब किसी के यहाँ दावत खाऐं तो मेज़बान को ये दुआ देना:

اَللّٰھُمَّ اَطۡعِمۡ مَنۡ اَطۡعَمَنِیۡ وَاسۡقِ مَنۡ سَقَانِیۡ۔

अल्लाहुम्म अत्इम मन अत्अमनी वस्क़ि मन सक़ानी।

तर्जमा: इलाही ! इस शख़्स को खिला जिस ने मुझे खाना खिलाया और इस को पिला जिस ने मुझे पिलाया। (मुस्नदे अबू दाऊद अत्तयालिसी १२५६)

(१९) खाने के बाद की दुआ पढ़ना।

(२०) खाने के बाद हाथ धोना और कुल्ली करना।

पानी पीने की सुन्नतें

(१) दाऐं हाथ से पीना। (मुस्लिम:१०-२०२०)

(२) बैठ कर पीना।(मुस्लिम:५३९४,अ़न अनस रज़ि.)

(३) देख कर पीना। (तिर्मिज़ी: १८८५)

(४) बिस्मिल्लाह पढ़कर पीना।(तिर्मिज़ी: १८८५)

(५)तीन साँस में पीना और साँस लेते वक़्त बर्तन को मुंह से अलग करना।

(मुस्लिम:५४०४-५४०६)

(६) पीने के बाद अल्ह़म्दुलिल्लाह कहना। (तिर्मिज़ी: १८८५ अ़न इब्ने अ़ब्बास रज़ि.)

(७) बर्तन के टूटे हुए किनारे की तरफ़ से ना पीना।(अबूदाऊद:३७४४,अ़न अबी सईद खुदरी रज़ि.)

(८)पानी पीने के बाद ये दुआ़ पढ़ना:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَقَانَا عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهٖ وَلَمْ يَجْعَلْهُ مِلْحًا اُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا۔

अलह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी सक़ाना अज़्बम फुरातम बिरह़मतिहि व लम यज्अ़ल्हू मिल्ह़न उजाजम बिज़ुनूबिना। (अद्दुआ़ लित्तबरानी:८९९)

तर्जमा: तमाम तारीफ़े उस अल्लाह के लिए हैं, जिस ने अपनी रह़मत से हमें मीठे पानी से सैराब किया, और हमारे गुनाहों की वजह से उस को खारा और नमकीन नही बनाया।

सफ़र की सुन्नतें

(१) जहाँ तक हो सके सफ़र में कम अज़ कम दो आदमी का होना तन्हा सफ़र ना करना। (बुख़ारी २९९८ अ़न इब्ने उ़मर)

(२) सवारी के लिए रिकाब में पॉव रखते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना। (अबू दाऊद २६०२)

(३) सवारी पर अच्छी तरह बैठ जाए तो तीन मर्तबा अल्लाहु अकबर कहना फिर ये दुआ़ पढ़ना:

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا کُنَّا لَہٗ مُقۡرِنِیۡنَ وَاِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ۔ اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسۡأَلُكَ فِیۡ سَفَرِنَا ھَذَا الۡبِرَّ وَالتَّقۡوٰی وَمِنَ الۡعَمَلِ مَاتَرۡضٰی، اَللّٰھُمَّ ھَوِّنۡ عَلَیۡنَا سَفَرَنَا ھَذَا وَاطۡوِعَنَّا بُعۡدَہٗ، اَللّٰھُمَّ أَنۡتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالۡخَلِیۡفَةُ فِی الۡأَھۡلِ، اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنۡ وَّعۡثَاءِ السَّفَرِ وَکَآبَةِ الۡمَنۡظَرِ وَسُوۡءِ الۡمُنۡقَلَبِ فِی الۡمَالِ وَالۡأَھۡلِ۔ (مسلم: ۱۳۴۲، ۲۵۴، عن ابن عمر رضی اللہ عنہ)

सुब्ह़ानल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून।अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक फी सफरिना हाज़ल बिर्र व-त्तक़्वा व मिनल अ़मलि मा तरज़ा अल्लाहुम्म हव्विन अ़लैना सफरना हाज़ा वत्वि अ़न्ना बुअ़्दहू, अल्लाहुम्म अन्त-स़्साह़िबु फि-स्सफरि वल ख़लीफतु फिल अहलि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिंव्वअ़साइ-स्सफरि व कआबतिल मंज़रि व सूइल मुंक़लबि फिल मालि वल अहलि।

(मुस्लिम:४५२,१३४२ अ़न इब्ने उ़मर रज़ि.)

सलाम, मुस़ाफ़ा व मुआ़नक़ा की सुन्नतें

(१) सलाम में पहल करना।

(अबू दाऊद ५१९९, अ़न इब्ने उ़मर)

(२) अस्सलामु अ़लैकुम अच्छी तरह अदा करना (आ़मतौर से सलाम अलैकुम बोलते हैं जो सहीह नहीं) (३)हाथ या सर या उंगलीयों के इशारे से सलाम ना करना और उस का जवाब ना देना मगर जब कि मुख़ातब दूर हो।

(तिर्मिज़ी २६९५)

(४)घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करना। (मुस्तदरक ३५१५)

(५)रूख़्सत होते वक़्त सलाम करना।

(मुसन्नफ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ १९४५०, अ़न क़तादा मुर्सलन)

(६)दोनों हाथ से मुसाफ़ा करना ।

(बुख़ारी ६२६५, बाबुल अख़्ज़ि बिलयदैन व साफह़ ह़म्माद ब्नु ज़ैद इब्न मुबारक बियदिही।

(७)जब सफ़र वापस हो तो मुआ़नक़ा करना।(तिर्मिज़ी २७३२)

सलाम के हुक़ूक़

(१) मुसलमान मुसलमान से मिले तो सलाम करे। (२) चलने वाला बैठे हुए को सलाम करे। (३) सवार बैठे हुए को सलाम करे। (४) कम तादाद बड़ी तादाद को सलाम करे।

(५)छोटा बड़े को सलाम करे। (६) ज़ोर से सलाम करे ताकि मुख़ातब सुन ले।

(आ़लमगीरी:५-३२५)

वह लोग जिन को सलाम करना मक्रूह है

(१)वुज़ू करने वाले को (२)ह़माम में मौजूद शख़्स को (३) ख़ाना खाने वाले को(४)लड़ाई झगड़ा करने वाले को (५)कुराने करीम की तिलावत करने वाले को (६)अल्लाह का ज़िक्र करने वाले को (७)ह़ज में तल्बिया पढ़ने वाले को

(८)जुमा वग़ैरह में ख़ुत्बा देने वाले को(९)तक़रीर करने वाले को (१०)मस्जिद और मदरसे में दर्स व तद्रीस या वाज़ व नसीहत करने वाले को(११)अज़ान या इक़ामत कहने वाले को(१२)क़ज़ाए हाजत में मश्ग़ूल शख़्स को(१३)स्कूटर या गाड़ी वग़ैरह पर सवार लोगों को। इसी तरह उस शख्स को जो सड़क पार कर रहा हो।

(आलमगीरी:५-३२५,३२६,तातारख़ानिया:८२-७९)

नोट: अगर कोई शख़्स इन हालात में सलाम करे तो सलाम करने वाले के सलाम का जवाब देना लाज़िम नहीं है, लिहाज़ा ऐसे हज़रात को सलाम ना करना चाहिए।

छींक की सुन्नतें

(१)छींकते वक़्त आवाज़ को पस्त करना।

(तिर्मिज़ी:२७४५)

(२)अल्हम्दु लिल्लाह कहना (बुख़ारी)

(३)हाथ या कपड़ा मुँह पर रखना।

(तिर्मिज़ी २७४५)

(४) अगर कोई "यरहमुक-ल्लाह" कहे तो "यहदीकुमु-ल्लाहु व युस्लिहु-बालकुम" से जवाब देना। (अबूदाऊद: ५०३५)

जमाई की सुन्नतें

(१)अगर जमाई आए तो इम्कान भर रोकना (बुख़ारी :३२८९)

(२)जमाई लेते वक़्त बाए हाथ की पुश्त को मुँह पर रखना।

(३) हा हा की आवाज़ निकालना।

(अबूदाऊद:५०३०-५०३१)

बीमारी, इ़लाज और इ़यादत की सुन्नतें

(१)बीमारी में दवा और इ़लाज कराना मगर

शिफ़ा में नज़र अल्लाह पर रखना।

(अबूदाऊद:३८७६)

(२)नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़ों से परहेज़ करना।(तिर्मिज़ी:२०३८ अ़न अबि दर्दा रज़ि.)

(३)बीमार भाई की इयादत के लिए जाना। (बुख़ारी २४४५)

(४)बीमार पुर्सि कर के जल्द लौट आना। (मौसुअ़ह, कुवेत: ३१,७८)

(५) बीमार की हर तरह़ से तसल्ली करना।(इब्ने माजा १४३८)

(६) जब किसी मरीज़ की इ़यादत करे तो यूँ कहना:

لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ۔

ला बअ्स तहूरुन इन्शाअल्लाह०

(बुख़ारी ३६१६, ५६५६)

फिर उस की शिफ़ायाबी के लिए सात बार दुआ़

पढ़ना:

اَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ۔

अस्अलुल्लाहल अज़ीमि रब्बल अर्शिल अज़ीमि अयंयशफिक।

तर्जमा: मैं अर्शे अज़ीम के मालिक अल्लाह तआला से ये सवाल करता हूँ कि वो तुझे शिफ़ा दे।(अबू दाऊद ३१०८, अन इब्ने अब्बास)

सोने की सुन्नतें

(१) ईशा के बाद जल्दी सोने की फ़िक्र करना दुनिया की बात ना करना।(मुस़न्नफ अब्दु-र्ज़्ज़ाक़ २१३)

(२)सोने से पहले दूसरे कपड़े तब्दील करना।

(३) बावुज़ू होना। (मुत्तफक़ अलैह, बह़वाला

मिश्कात, स. २०९)

(४) तीन मर्तबा सुरमा लगाना।

(बुख़ारी ७३९३)

(५) तीन सलाई सुरमा लगाना। (शमाइले तिर्मिज़ी, स. ४)

(६) तीन मर्तबा इस्तेग़फ़ार पढ़ना:

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ۔ (ترمذی:۳۳۹۷)

अस्तग़्फिरु-ल्लाहल्लज़ी ला ईलाह इल्ला हुवल ह़य्युल क़य्यूमु व अतूबु ईलैहि।

तर्जमा: मैं अल्लाह से बख़्शिश का तलबगार हूँ, जिस के सिवा कोई माबूद नही, वो ज़िंदा और संभालने वाला है और उसी की तरफ़ मुझे लौटकर जाना है।

(७) तस्बीह़े फ़ातिमा पढ़ना (सुब्ह़ानल्लाह ३३

बार, अल्ह़म्दु लिल्लाह ३३ बार, अल्लाहु अकबर ३४ बार और एक मर्तबा कलिमा पढ़ना) (बुख़ारी: ३७०५)

(८) तीनों कुल पढ़ना।

(सूर-ए-इख़्लास़, सूर-ए-फ़लक़, सूर-ए- नास)

(बुख़ारी: ५०१७)

(९) दाहिनी करवट लेट कर हाथ गाल के नीचे रखना। (नसाई: २३६७, अ़न ह़फ़स़ह)

(१०)पेट के बल औंधा ना लेटना। (मुस्नदे अह़मद : ८०४१)

(११) बिस्तर पर लेट कर ये दुआ़ पढ़ना:

بِاسْمِكَ رَبِّيْ وَضَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ اَرْفَعُهٗ اِنْ اَمْسَكْتَ نَفْسِيْ فَاغْفِرْلَهَا وَ اِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ۔

बिस्मिक रब्बी वजअ़्तु जंबी व बिक अर्फ़उ़हू इन अम्सक्त नफ्सी फग़्फिर लहा व इन अर्सल्तहा फह़फज़्हा बिमा तह़फज़ू बिहि इ़बादक-स़्सालिह़ीन।

तर्जमा: ऐ मेरे रब! मै ने आप के नाम से अपना पहलू रखा और आप ही के नाम (की बरकत)से उसे उठाउंगा, अगर आप मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर लें तो उसे बख़्श दीजिएगा और अगर आप उस को छोड़ दें तो आप उस की उस चीज़ के ज़रिये हिफ़ाज़त फरमाईयेगा जिस के ज़रिये आप अपने नेक बंदों की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं

(१२) सोने की दुआ़ पढ़ना।

اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰی۔

अल्लाहुम्म बिस्मिक अमूतु व अह़या।

(बुख़ारी: ६३१३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! तेरे ही नाम से मरूंगा

और तेरे ही नाम से जीता हूँ।

(१३)सोने से पहले मिस्वाक करना।

चंद मस्नून दुआऐं

दुआ मोमिन का हथियार है

हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है के रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया : दुआ मोमिन का हथियार है, दीन का सुतून है, आस्मान व ज़मीन का नूर है। (ह़ाकिम, जिल्द १ स. ४९२)

(१) सो कर उठने की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

अल ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़याना बाद मा अमातना व इलैहिन्नुशूर। (अबू दाऊद ५०५१, अ़न

हुज़ैफा)

तर्जमा:तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह की हैं जिस ने हमें मारने के बाद ज़िंदा किया(नींद के बाद जगाया) और उसी की तरफ़ उठना है।

२. बैतुल ख़ला में दाख़िल होने की दुआ:

بِسۡمِ اللهِ،اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡخُبُثِ وَالۡخَبَائِثِ.

बिस्मिल्लाहि,अल्लाहुम्म इन्नी अउज़ु बिक मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाईस़। (बुख़ारी:१४२,मुस्लिम:८५७)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मैं ख़बीस़ जिनों और जिनियों से तेरी पनाह में आता हूँ।

(३)कपड़ा पहनने की दुआ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِیۡ كَسَانِیۡ هٰذَا وَرَزَقَنِیۡهِ مِنۡ غَیۡرِ حَوۡلٍ مِّنِّیۡ وَلَا قُوَّةٍ.

अल ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व रज़क़्नीहि मिन ग़ैरी ह़ौलिम मिन्नी व ला कुव्वह। (अबू दाऊद:४०२५)

तर्जमा: अल्लाह का शुक्र है जिस ने मुझे ये लिबास पहनाया और बग़ैर मेरी ताक़त व कुव्वत के मुझे ग़ैब से ये अ़ता फ़रमाया।

४. नया कपड़ा पहनने की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ مَا أُوَارِىْ بِهٖ عَوْرَتِىْ وَأَتَجَمَّلُ بِهٖ فِىْ حَيَاتِىْ.

अल ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिहि औ़रती व अतजम्मलू बिहि फी ह़याती। (तिर्मिज़ी ३५६०)

तर्जमा: खुदा का शुक्र है जिस ने मुझे वो(लिबास) पहनाया, जिस से मैं अपना सतर ढॉकता हूॅ और ज़िदंगी में आरास्तगी हासि़ल करता

हूँ।

(५) आईना देखने की दुआ

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ۔

अल्लाहुम्म अन्त ह़स्सन्त ख़ल्क़ी फ ह़स्सिन ख़ुलुक़ी। (सिलाहुल मुस्लिम फिद्दुआ़ वज़्ज़िक्र ८७९)

(६)घर में दाख़िल होने की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ أَسْئَلُكَ خَیْرَ الْمَوْلِجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰہِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰہِ خَرَجْنَا وَعَلَی اللّٰہِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरल मौलजि व ख़ैरल मख़्रजी बिस्मिल्लाहि वलज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अ़लल्लाहि रब्बना तवक्कल्ना। (अबू दाऊद : ५०९८)

तर्जमा: खुदाया! मै तुझ से अंदर आने और बाहर जाने की बेहतरी तलब करता हूँ, अल्लाह के नाम से हम दाख़िल हुए और अल्लाह के नाम से हम निकले और उसी पर जो हमारा परवरदिगार है भरोसा किया।

(७)घर से निकलने की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि।(अबू दाऊद ५०, ९७)

तर्जमा: अल्लाह के नाम से मैं अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल पर भरोसा करता हूँ किसी भी शर और बुराई से बचना और किसी भी नेकी या ख़ैर का हासि़ल होना अल्लाह की मदद के बग़ैर मुम्किन नहीं।

(८)सवारी पर सवार होने की दुआ

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ
مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ۔ اَللّٰھُمَّ اِنَّا
نَسْأَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا ھَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰی وَمِنَ
الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی، اَللّٰھُمَّ ھَوِّنْ عَلَیْنَا سَفَرَنَا
ھَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰھُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ
فِی السَّفَرِ وَالْخَلِیْفَةُ فِی الْأَھْلِ، اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ
اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ
وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْأَھْلِ۔ (مسلم
:۱۳۴۲، ۲۵۴، عن ابن عمر رضی اللہ عنہ)

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा वमा कुन्ना

लहू मुक़्रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून।अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक फी सफरिना हाज़ल बिर्र वत्तक़्वा व मिनल अ़मलि मा तर्जा, अल्लाहुम्म हव्विन अलैना सफरना हाज़ा वत्वि अ़न्ना बुअ़्दहू, अल्लाहुम्म अन्तस़्स़ाहि़बु फिस्सफरि वल ख़लीफतु फिल अहलि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिव्वअ़्स़ाइ स्सफरि व कआबतिल मंज़रि व सूइल मुंक़लबि फिल मालि वल अह्लि।

तर्जमा: पाक है वो ज़ात जिस ने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया (वरना हमारे अंदर इतनी ताक़त ना थी कि)हम इन को अपने क़ाबू में कर लेते और बे शक हमें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है। खुदाया ! हम तुझ से अपने सफर में नेकी , परहेज़गारी, और तेरी खुशनूदी के काम चाहते हैं। ऐ अल्लाह ! तू हम पर सफ़र आसान

कर दे और उस की दूरी को हमारे लिए नज़्दीकी में बदल दे। इलाही ! तू ही सफ़र का रफ़ीक़ और घर वालों में नाइब है। ऐ अल्लाह ! मै तुझ से सफ़र की परेशानी और नागवार मन्ज़र और वापसी पर माल व औलाद में ख़राबी से पनाह मॉगता हूॅ।

(मुस्लिम:४५२,१३४२ अ़न इब्ने उ़मर रज़ि.)

(८)सवारी पर सवार होने की दुआ़

اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ۔

आइबून ताइबून आ़बिदून लिरब्बिना ह़ामिदून।(मुस्लिम: ३३३९)

तर्जमा: हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इ़बादत करने वाले, सिर्फ़ अपने नबी की ह़म्द करने वाले हैं।

(१०)मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

अल्लाहुम्म-फ्तह्ली अब्वाब रह़मतिक

(मुस्लिम:७१३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मेरे लिए अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दीजिए।

(११) **मस्जिद से निकलने की दुआ़**

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलूक मिन फज़्लिक

(मुस्लिम:७१३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ।

(१२)**वुज़ू से पहले की दुआ़**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहि-र्रह़मानि-र्रह़ीम

(मिरक़ात:२-१०५)

(१३)**वुज़ू करते वक़्त की दुआ**

हदीस़ शरीफ़ में आया है "जो शख़्स़ वुज़ू करते वक़्त इस दुआ़ को पढ़ता है उस कि मग़्फ़िरत का एक परचा लिख कर और उस पर मुहर लगा कर रख दिया जाता है। क़यामत के दिन तक उस की मुहर ना तोड़ी जाएगी और मग़्फ़िरत का हुक्म बरक़रार रहेगा। वो दुआ़ ये है:

سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ.

सुब्ह़ानक-ल्लाहुम्म व बिह़म्दिक अस्तग़्फ़िरुक व अतुबू इलैक।

(नसाई,तबरानी,अत्तर्ग़ीब व-त्तर्हीब:१-१०५)

(१४)**वुज़ू के बाद की दुआ**

کلمۂ شہادت اور اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ

التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

कलिम-ए-शहादत और अल्लाहुम्म-ज़्अ़ल्नी मिन-त्तव्वाबीन वज्अ़ल्नी मिनल मुततहि्हरीन।(तिर्मिज़ी: ५५)

तर्जमा:ऐ अल्लाह ! मुझे कस़रत से तौबा करने वालों और ख़ूब पाक रहने वाले बंदों में से बना दे।

(१५)**वुज़ू के दर्मियान की दुआ़**

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذَنْبِىْ وَوَسِّعْ لِىْ فِىْ دَارِىْ

وَبَارِكْ لِىْ فِىْ رِزْقِىْ-

अल्लाहुम्म ग़्फिरली ज़ंबी व वस्सिअ़ ली फी दारी व बारिक ली फी रिज़्क़ी।

(तिर्मिज़ी:३५००,बाब ७९)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मेरा गुनाह बख़्श दे और

मेरे घर में वुस्अ़त दे और मेरे रिज़्क़ मे बरकत दे।

(१६) वुज़ू से पहले की एक अहम दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ۔

बिस्मिल्लाहि वल्ह़म्दु लिल्लाहि

(आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ऐ अबु हुरैरह जब तुम वुज़ू करो तो ये कह लिया करो जब तक तुम्हारा वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक्त तक तुम्हारे मुह़ाफ़िज़ फ़रिश्ते तुम्हारे लिए बराबर नेकियाँ लिखते रहेंगे।) (अल मुअ्ज़मु-स्स़ग़ीर: १९६, अबू हुरैरह)

(१७)अज़ान की आवाज़ सुनने की दुआ़

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ، رَضِيْتُ

بِاللّٰہِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا وَبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا۔

अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वह़दहू ला शरीक लहू व अशहदु अन्न मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू रज़ीतु बिल्लाही रब्बं व बिमुह़म्मदिं रसूला व बिल इस्लामि दीनं।

(मुस्लिम: ७८८, नसाई : ६७९, इब्ने माजा : ७२१, तिर्मिज़ी: २१०)

तर्जमा: मैं गवाही देता हूँ कि एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं और बेशक मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस के बंदे और रसूल हैं, मैं अल्लाह के रब, मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रसूल और इस्लाम के दीन होने को दिल से पसंद करता हूँ।

(१८)अज़ान के बाद की दुआ़।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَا نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادِ۔

अल्लाहुम्म रब्ब् हाज़िहि-द्दअ्वतित्ताम्मति वस़्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल वसीलत वल्फज़ीलत वब्अ़स्हू मक़ामम महमूद निल्लजी़ व अ़त्तहू इन्नक ला तुख़्लिफुल मीआ़द।(बुख़ारी: ६१४, सुननुल बैहक़ी अल कुबरा: १७९)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! इस पूरी (व कामिल) दुआ़ और अदा की जाने वाली नमाज़ के परवरदिगार! मुहम्मद स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता कर और उन को मक़ामे महमूद में पहुंचा जिस का तू ने वादा किया है,

बेशक तू वादा ख़िलाफ़ी नही करता।

(१९)मग़रिब की अज़ान की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ

نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْلِيْ

अल्लाहुम्म इन्न् हाज़ा इक़्बालु लैलिक व इदबारु नहारिक व अस्वातु दुआतिक फ़ग़्फिरली।(अबू दाऊद: ५३०)

तर्जमा: खुदाया ! ये तेरी रात के आने और तेरे दिन के जाने का वक़्त है और तेरे मुअज़्ज़िनों की अज़ान का वक़्त है, इस वजह से मुझे बख़्श दे।

(२०)वित्र के बाद की दुआ

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ

सुब्हानल मलिकिल कुद्दूस, तीन बार पढ़े।

(नसाई, मिश्कात:११२, अबूदाऊद :२०२)

(२१)जमाअ़त की स़फ़ मे शरीक होने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اٰتِنِىْ اَفْضَلَ مَاتُؤْتِىْ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ۔

अल्लाहुम्म आतिनी अफ्ज़ल मा तुअ्ती इ़बादक–स्सालिह़ीन।

(सुनने नसाई अल कुबरा : ९९२१, अ़न सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़)

तर्जमा:ऐ अल्लाह ! मुझे उस चीज़ से अफ्ज़ल अ़ता फ़रमाईए, जो आप अपने नेक बंदों को अ़ता फ़रमाते हैं।

(२२)मग़्रिब की सुन्नत के बाद की दुआ़

يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قُلُوْبَنَا عَلٰى دِيْنِكَ۔

या मुकल़्लिबल कुलूबि स़ब्बित कुलूबना अ़ला दीनिक। (अ़मलुल यौमि वल्लैलह: ६५८, अ़न उम्मे सलमह)

तर्जमा: ऐ दिलों को फ़ेरनेवाले ! हमारे दिलों को अपने दीन पर जमा दीजिए।

(२३)खाने के शुरू में दुआ़ भूल जाए तो ये पढ़े

بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَآخِرَہٗ۔

बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू

(अबूदाऊद:३७६९)

तर्जमा:(मैं) अल्लाह ही के नाम से (खाना खाता हूँ) शुरू में भी और आख़िर में भी।

(२४)**खाने के बाद की दुआ़**

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡ اَطۡعَمَنَا وَ سَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسۡلِمِیۡنَ۔

अल ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्अ़मना व सक़ाना व जअ़लना मुस्लिमीन।

(अबू दाऊद: ३८५२, तिर्मिज़ी:३४५७)

तर्जमा : खुदा का शुक्र है जिस ने हम को खिलाया, पिलाया और मुसलमान बनाया।

(२५)**दस्तरख़्वान उठाने की दुआ**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مُكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا۔

अल ह़मदु लिल्लाहि ह़म्दन कस़ीरन तयि्यबन मुबारकन फीहि ग़ैर मुक्फीयि्यन व ला मुवद्दइ़न व ला मुस्तग़्नियन अ़न्हू रब्बना।
(बुख़ारी:५४५८,अबू दाऊद: ३८५१)

तर्जमा: तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं (ऐसी तारीफ़ें) जो बहुत ज़्यादा पाकीज़ा और बाबरकत हो जिसे ना काफी समझा गया हो (कि मज़ीद की ज़रूरत ना हो) ना छोड़ा गया हो और ना उस से बे परवाही की गई हो, ऐ हमारे रब!।

(२६) **दूध पीने की दुआ़**

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ۔

अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहि वज़िद्ना मिन्हु० (अबू दाऊद :३७३२)

तर्जमा: ऐ अल्लाह हमारे लिए सब में बरकत दे और हमें इस से ज़्यादा इ़नायत फ़रमा।

(२७)**नया फ़ल खाने की दुआ़**

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا وَفِيْ ثِمَارِنَا وَفِيْ مُدِّنَا وَفِيْ صَاعِنَا بَرَكَةً مَعَ بَرَكَةٍ۔ (مسلم:۳۴۰۱)

अल्लाहुम्म बारिक लना फी मदीनतिना व फी सि़मारिना व फी मुद्दिना व फी स़ाइ़ना बरकतम मअ़ बरकतिं। (मुस्लिम:३४०१)

तर्जमा: ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे शहर,

हमारे फल, हमारे मुद (ग़ल्ला नापने के एक पैमाने का नाम)और हमारे साअ़ (एक पैमाने का नाम) में मुसलसल बरकत फ़रमा।

(२८)दावत खाने के बाद की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِيْ وَاَسْقِ مَنْ اَسْقَانِيْ۔

(مسلم:۵۴۸۳،باب اکرام الضیف وفضل ایثارہ، بعض روایات میں اسقانی کے بجائے سقانی ہےتفصیل کے لیے دیکھئے:مسند ابی داؤدالطیالسی:۱۲۵۶)

अल्लाहुम्म अत्इ़म मन अत्अ़मनी व अस्क़ि मन अस्क़ानी।(मुस्लिम: ५४८३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! इस शख़्स को खिला जिस ने मुझे खिलाया और इस को पिला जिस ने मुझे पिलाया।

(२९)मेज़बान के घर से चलने के वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَھُمْ فِیْمَا رَزَقْتَھُمْ وَاغْفِرْ لَھُمْ وَارْحَمْھُمْ۔

अल्लाहुम्म बारिक लहुम फीमा रज़क़्तहुम वग़्फिर लहुम वर्ह़म्हुम। (मुस्लिम:५४४९ अबू दाऊद:३७३१)

तर्जमा: खुदाया ! तूने जो कुछ इन्हें दिया है इस में उन के लिए बरकत अ़ता फ़रमा और उन्हें बख़्श दे और उन पर रह़म फ़रमा।)

(३०)सोने की दुआ

اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰ

अल्लाहुम्म बिस्मिक अमूतु व अह़या।

(बुख़ारी: ६३१३)

तर्जमा:ऐ अल्लाह ! मैं तेरे ही नाम पर मरुंगा

और तेरे ही नाम पर जीता हूॅं।

(३१) सोने लगे और नींद ना आए तो उस की दुआ

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَأَتِ الْعُيُوْنُ اَنْتَ حَیٌّ قَيُّوْمٌ لَا تَاْخُذُكَ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ اَهْدِأْ لَيْلِيْ وَاَنِمْ عَيْنِيْ۔

अल्लाहुम्म ग़ारतिन्नुजूमु व हदअ्तिल उ़यूनु अन्त ह़य्युन क़य्यूमुन ला ताख़ुज़ुक सिनतुं-व्वला नौमुन या ह़य्यु या क़य्यूमु अह्दिअ लैली व अनिम ऐनी। (अ़मलुल यौमि वल्लैलह: ७४९, अ़न ज़ैद बिन स़ाबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

तर्जमा:ऐ अल्लाह ! सितारे डूब गए और आँखे पुरसुकून हो गईं, आप ज़िंदा हैं और क़ायम रहने वाले हैं, आप को ना उंघ आती है और ना नींद

आती है। जिंदा और क़ायम रखने वाले ! इस रात को मुझे आराम दे और मेरी आँख को सुला दे।

(३२) सोते वक़्त डर जाए तो उस की दुआ़

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنَ۔

अऊ़ज़ु बिकलिमाति-ल्लाहि-त्ताम्मती मिन ग़ज़बिही व इ़क़ाबिही व शर्रि इ़बादिही व मिन हमज़ाति श्शैयातीनि व अंय्यह़ज़ुरुन।

(अलमुस्तदरक: २०१०)

तर्जमा: मैं अल्लाह के मुकम्मल कमालात के साथ अल्लाह की नाराज़गी, उस के अ़ज़ाब, उसके बंदों के शर, शैतान के चूक लगाने से और इस से के वो मेरे क़रीब फटकें। पनाह तलब करता हूँ।

(३३) **सुबह् की दुआ़**

اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

अस्बह़ना व अस्बह़ल मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमिन। (अबू दाऊद: ५०८४)

तर्जमा:हम और सारा मुल्क अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहान का पालनेवाला है सुबह के वक़्त में दाखिल हुए

(३४)**शाम की दुआ़**

اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

अम्सैना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

तर्जमा: हम और सारा मुल्क अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहान का पालनेवाला है, शाम के वक़्त में दाखिल हुए।(अबू दाऊद:५०८६)

(३५)**मग़्रिब की फ़र्ज़ नमाज़ के बाद की दुआ़**

يَاقَوِيُّ या क़विय्यु ११ मर्तबा पढ़े इस के पढ़ने से दिमाग़ की कमज़ोरी दूर होती है।

(३६) **सूरज निकलते वक़्त पढ़ने की दुआ़**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَقَالَنَا یَوْمَنَا هٰذَا وَلَمْ یُهْلِكْنَا بِذُنُوْبِنَا۔

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अक़ालना यौमना हाज़ा व लम युहलिक्ना बिज़ुनूबिना।

तर्जमा: तमाम तारीफ़े उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने आज के दिन हमें माफ़ रखा और हमें गुनाहों की वजह से हलाक नहीं फ़रमाया। (मुस्लिम: ८२२)

(३७)**मज्लिस के इख़्तेताम की दुआ़**

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ۔

सुब्ह़ानक-ल्लाहुम्मा व बिह़म्मदिक अश्हदु अ-ल्लाइलाह इल्ला अन्त अस्तग़्फिरुक व अतूबु इलैक। (अबू दाऊद: ४८५९)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! आप की ज़ात पाक है, मैं आप की ह़म्द बयान करता हूॅं , गवाही देता हूॅं कि आप के सिवा कोई माबूद नही है आप ही से माफ़ी चाहता हूॅं और आप के सामने तौबा करता हूॅं।

(३८)जहन्नम से छुटकारे की दुआ़

फ़ज्र की नमाज़ के बाद सात मर्तबा:

اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

“अल्लाहुम्म अजिर्नी मिन-न्नार” पढ़ें।

(अबूदाऊद:५०८१)

तर्जमा:ऐ अल्लाह ! मुझे दोज़ख़ से बचा लीजिए।

इसी तरह़ मग़्रिब के बाद सात मर्तबा पढ़ें। जहन्नम से छुटकारा हासि़ल होगा। (इन्शा अल्लाह)

(३९)किसी को परेशानी में देख कर पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी आ़फानी मिम्मब्तलाक बिही व फज़्ज़लनी अ़ला कसी़रीम मिम्मन ख़लक़ तफ्ज़ीला . (तिर्मिज़ी:३४३१)

तर्जमा:तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे उस चीज़ से आ़फ़ियत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और उस ने मुझे अपनी मख़लूक़ में बहुत से लोगों पर बड़ी फ़ज़ीलत दी।

(४०)गुस्सा आए तो उस वक़्त की दुआ़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अउज़ु बिल्लाहि मिन-श्शैतानि-र्रजीम
(मुस्लिम: ६८१२)

तर्जमा: मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह लेता हूँ।

(४१)इस्तेख़ारा की दुआ

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि हम लोगों को नबी-ए-करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस्तेख़ारा इस तरह़ सिखलाते थे जिस तरह़ कुरान की सूरतें सिखलाते थे। चुनांचे आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जब कोई अहम काम दरपेश हो तो दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ो, नमाज़ से फारिग़ होने के बाद ये दुआ पढ़ो।(तिर्मिज़ी:४८०)

بسم الله الرحمٰن الرحيم

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ

وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ
الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآاَقْدِرُ وَتَعْلَمُ
وَلَآاَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ
كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَاالْاَمْرَخَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ
وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ فَاقْدِرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ
ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ
هٰذَاالْاَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمُعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ
اَمْرِيْ فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ
وَاقْدِرْلِيَ الْخَيْرَحَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِيْ
بِهٖ۔(ترمذی:۴۸۰)

बिस्मिल्लाहि-रॅह़मानि-रॅह़ीम

अल्लाहुम्म इन्नी अस्तख़ीरुक बिइ़ल्मिक व

अस्तक़्दिरुक बिकुदरतिक व अस्अलुक मिन फज़्लिकल अज़ीमि फइन्नक तक़्दिरु वला अक़्दिरु व तअ्लमु वला अअ्लमु व अन्त अ़ल्लामुल गुयूब अल्लाहुम्म इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अम्र ख़ैरुल्ली फी दीनी व मआ़शी व आ़क़िबती अम्री फक़्दिर्हु ली व यस्सिरहु ली सुम्म बारिक ली फीही व इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अम्र शर्रुल्ली फी दीनी व मआ़शी व आ़क़िबति अम्री फस्रिफ्हू अ़न्नी वस्रिफ्नी अ़न्हू वक़्दिर लियल ख़ैर हैसू कान सुम्म अर्ज़िनी बिही।

तर्जमा: ऐ अल्लाह मैं आप से ख़ैर तलब करता हूँ; इसलिए कि आप को इ़ल्म है और कुदरत तलब करता हूँ; आप को कुदरत है और मुझे कुदरत नही है। आप को इ़ल्म है और मुझे इ़ल्म नहीं है और आप ग़ैब की बातों को ख़ूब जानने वाले हैं। ऐ अल्लाह! अगर आप के इ़ल्म में ये

काम मेरे लिए दीन और मआ़श में बेहतर और अंजाम के ऐतेबार से भला है तो इस को मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा दीजिए और आसान फ़रमा दीजिए और मुझे इस में बरकत अ़ता फ़रमा दीजिए और अगर आप के इ़ल्म में ये काम मेरे लिए बुरा है तो इस को मुझ से और मुझ को इस से दूर फ़रमा दीजिए और मेरे लिए ख़ैर मुक़द्दर फ़रमा दीजिए जहां कहीं भी हो फिर मुझे इस पर मुत्मइन और खुश रखिए।

लफ़्ज़े "हाज़ल अम्र" जो दो जगह है जब यहां पहुंचे तो अपने उस काम का तस़व्वुर करे जिस के बारे में इस्तेख़ारा करना है।

(४२)मुस्तजाबु -द्दअ्वात बनने का अ़मल

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ۔

अल्लाहुम्म-ग़्फिरली व लिल मुअ्मिनीन वल

मुअ्मिनात।

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मेरी और तमाम मोमिन मर्द और मोमिन औरतों की मग़्फ़िरत फ़रमाइए।

फाइदा : ह़दीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स़ दिन में २५ या २७ मर्तबा तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगेगा वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उन मुस्तजाबु-द्दअ्वात लोगों में शामिल हो जाएगा जिन की दुआओं से ज़मीन वालों को रिज़्क़ दिया जाता है।

(मजमउ-ज़्ज़वाइद व मंबउ़ल फवाइद १७६००, अ़न अबी दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु.)

(४३)इख़्लास़ के हुसूल की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ

بِهٖ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अउज़ू बिक मिन अन उशिरक बिक शैअं व्व अन अअ्लमु बिही व अस्तग़्फिरुक लिमा ला अअ्लमु बिही। (अ़मलुल यौमि वल्लैलह लिइब्नि-स्सुन्नी: १/१४१, ह़दीस़ नम्बर: २८६)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! दानिस्ता तौर पर आप के साथ किसी को शरीक ठहराने से आप की पनाह चाहता हूँ और नादानिस्ता तौर पर हुई ग़लती से आप की बख़्शिश चाहता हूँ।

(४४)सुबह़ व शाम की तस्बीह़ात

(१) तीसरा कलिमा :

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔

सुब्ह़ानल्लाहि वल ह़म्दु लिल्लाहि वला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर वला ह़ौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम। (इब्ने माजा:३८७८)

(२) इस्तेग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ۔

अस्तग़्फिरुल्लाह रब्बी मिन कुल्ली जंबिव्व अतूबु इलैह।

(३) दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اَبْرٰهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ
عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى

اٰلِ اَبۡرٰهِيۡمَ اِنَّكَ حَمِيۡدٌ مَّجِيۡدٌ۔

अल्लाहुम्म स़ल्ली अ़ला मुह़म्मदिवं-व अला आलि मुह़म्मद कमा स़ल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक ह़मीदु-म्मजीद।

अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मद व अ़ला आलि मुह़म्मद कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक ह़मीदु-म्मजीद।

जुमा के मामूलात

सूर-ए-कहफ़ पढ़ना, दरूद शरीफ़ कस़रत से पढ़ना, मग़्रिब की अज़ान से चंद मिनट पहले दुआ़ का एहतेमाम करना।

फ़र्ज़ नमाज़ के मामूलात

(१) अल्लाहु अकबर और तीन मर्तबा इस्तेग़्फ़ार पढ़ना :फिर

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ

تَبَارَكْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ۔

२. अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्त या ज़ल्जलालि वल इक्राम।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ

وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

३. ला इलाह इल्लल्लाहु वह़दहू ला शरीक लहु, लहुल मुल्कु व लहुल ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्ली शैइन क़दीर।

اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ

لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ۔

४. अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा आतैत वला मुअ्तिय लिमा मनअ्त वला यंफअु ज़ल्जद्दी मिन्कल जद्द।

(५)तस्बीह़ाते फ़ातिमा पढ़ना ३३ बार

सुब्हानल्लाह, ३३ बार अल ह़म्दु लिल्लाह, ३४ बार अल्लाहु अक्बर।

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِكَ وَشُکْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ۔

६. अल्लाहुम्म अइ़न्नी अ़ला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नी इ़बादतिक।

ह़ादस़ात ,बीमारी और नुक़्स़ान से बचने की दुआ़एें

(१)बीमारी और तंगदस्ती दूर करने की दुआ़

تَوَکَّلْتُ عَلَی الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ یَکُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَلَمْ یَکُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَ کَبِّرْهُ

تَكْبِيْرًا۔

तवक्कल्तु अ़लल ह़य्यिल्लज़ी ला यमूतु अल ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िज़ वलदन व लम यकुल्लहु शरीकुन फिल मुल्की व लम यकुल्लहु व वलिय्युम-मिनज़्ज़ुल्ली व कब्बिरहु तक्बीरा। (मुस्नदे अबी यअ्ला अल मूसि़ली १२/२३-२४, ह़दीस़ नम्बर : ६६७१)

तर्जमा: मैं ने उस बाक़ी रहने वाली ज़ात पर भरोसा किया जिस पर फ़ना तारी नही होगी, तमाम तारीफ़ें ख़ुदा ही के लिए हैं जिस ने ना तो किसी को बेटा बनाया है और ना उस की बादशाही में कोई शरीक है और ना इस वजह से कि वो आ़जिज़ व नातवां है उसका कोई मददगार है और उस को बड़ा जानकर उसकी बड़ाई बयान करते रहो।

(२)हादसात से बचने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآاِلٰهَ اِلَّآاَنْتَ عَلَیْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِیْمِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَالَمْ یَشَأْ لَمْ یَكُنْ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْئٍ قَدِیْرٌ وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْماً اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِیَتِهَا اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ۔(الدعاء۔ الطبرانی ۳۴۳،عن ابی الدرداء رضی اللّٰہ عنہ)

अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त अलैक तवक्कल्तु व अन्त रब्बुल अर्शिल करीमि माशा अल्लाहु कान व मा लम यशअ लम यकुन वला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलियियल अज़ीमी अअलमु अन्नल्लाह अला कुल्लि शैइन क़दीरुन व अन्नल्लाह क़द अहात बिकुल्लि शैइन इल्मन अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रि कुल्ली दाब्बतीं अन्त आख़िज़ुम बिनासियतिहा इन्न रब्बी अ़ला सि़रातीम मुस्तक़ीम।

तर्जमा: ऐ अल्लाह! आप मेरे रब हैं आपके सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं आप अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक हैं जो कुछ अल्लाह ने चाहा हो गया और जो अल्लाह तआ़ला ने नहीं चाहा नहीं हुआ, गुनाहों से बाज़ रखना और नेकी की कुव्वत देना, बुजुर्ग बरतर अल्लाह की तरफ से है, मुझे

यक़ीन है कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और अल्लाह का इ़ल्म हर चीज़ को घेरे हुए है, ऐ अल्लाह! मै आप की पनाह चाहता हूँ अपने नफ़्स के शर से और हर जानवर के शर से जिस की पेशानी आप के क़ब्ज-ए-कुदरत में है, यक़ीनन मेरे रब सिराते मुस्तक़ीम पर है।

(३) ह़िफ़ाज़त की दुआ़

ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मुझे नबी-ए-अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दुआ़ सिखलाई और फ़रमाया कि जो उसे सुबह पढ़ लेगा उस पर किसी का इख़्तियार नही चलेगा यानी बिइज़्निल्लाह कोई जिस्मानी व माली नुक़सान ना पहुंचा सकेगा।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

بِسۡمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفۡسِىۡ وَدِيۡنِىۡ بِسۡمِ اللّٰهِ عَلٰى

مَا اَعْطَانِیْ رَبِّیْ عَزَّ وَجَلَّ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْـئًا اَجِرْنِیْ مِنْ كُلِّ شَیْطٰنٍ رَّجِیْمٍ وَمِنْ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِیْدٍ، اِنَّ وَلِیِّیَ اللهُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ یَتَوَلَّی الصَّالِحِیْنَ، فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِیَ اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ۔

(الدعاء۔الطبرانی:۱۰۵۹)

बिस्मिल्लाहि-र्रह़मानि-र्रह़ीम.बिस्मिल्लाहि अ़ला नफ्सी व दीनी बिस्मिल्लाहि अ़ला मा अअ्तानी रब्बी अज़्ज़ व जल्ल ला उश्रिकु बिही शैअन अजिरनी मिन कुल्लि शैतानिर्रजीम, व मिन कुल्लि जब्बारिन अनीदिन, इन्न वलिय्यि यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल किताब व हुव यतवल्ल-स़्स़ालिहीन, फइन

तवल्लौ फ़कुल हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम। (अद्दुआ- अत्तबरानी : १०५९)

तर्जमा: अल्लाह के नाम से अपनी ज़ात और अपने दीन पर मदद चाहता हूँ और अल्लाह के नाम से उस चीज़ पर मदद चाहता हूँ जो मेरे इज़्ज़त व जलाल वाले रब ने मुझे अता फ़रमाई। मै उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। मेरे रब! मुझे हर शैतान मरदूद से और हर ज़िददी ज़ालिम के शर से पनाह अता फ़रमा दीजिए, बेशक मेरा दोस्त और मददगार अल्लाह है जिस ने किताब नाज़िल फ़रमाई और नेक बंदों की मदद किया करता है। फिर अगर ये लोग फिर जाऐं और न मानें तो कह दो कि खुदा मुझे किफ़ायत करता है। उस के सिवा कोई माबूद नही, उस पर मेरा भरोसा है और वही अर्शे

अज़ीम का मालिक है।

मंज़िल की अहमियत

ये मंज़िल आसेब, सह़र और बाज़ दूसरे ख़तरात से ह़िफ़ाज़त के लिए एक मुजर्रब अ़मल है। ह़ज़रत शाह वलीयुल्लाह तह़रीर फ़रमाते है कि ये ३३ आयात हैं जो जादू के अस़र को रफ़अ करती हैं और शयातीन, चोरों और दरिंदों से पनाह हो जाती है और बहिश्ती ज़ेवर में ह़ज़रत थानवी रह. फ़रमाते हैं: अगर किसी पर आसेब का शुबा हो तो मंज़िल में दी गई आयात को लिख कर मरीज़ के गले में डाल दें और पानी पर दम करके मरीज़ पर छिड़क दें और अगर घर में अस़र हो तो इन को पानी पर पढ़ कर घर के चारों गोशों में छिड़क दें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ
الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ
وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ
الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ
عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ
وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ﴿۷﴾

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الٓـمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ ۚۖۛ فِیۡہِ ۚۛ ہُدًی
لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَیۡبِ
وَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾
وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ

مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ④
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ⑤

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ
الرَّحِيْمُ ۔ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ
لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ
حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ٢٥٥ لَآ اِكْرَاهَ فِي

الدِّيْنِ ۙۛ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿۲۵۶﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ
الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ
الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى
الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵۷﴾ ؑ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ
يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ

مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ
الرَّسُوۡلُ بِمَآ اُنۡزِلَ اِلَيۡهِ مِنۡ رَّبِّهٖ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ ؕ
كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓـئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۚ
لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ اَحَدٍ مِّنۡ رُّسُلِهٖ ۚ وَقَالُوۡا سَمِعۡنَا
وَاَطَعۡنَا ۚ غُفۡرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيۡكَ الۡمَصِيۡرُ ﴿٢٨٥﴾ (١)
لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَهَا ؕ لَهَا مَا
كَسَبَتۡ وَعَلَيۡهَا مَا اكۡتَسَبَتۡ ؕ رَبَّنَا لَا
تُؤَاخِذۡنَآ اِنۡ نَّسِيۡنَآ اَوۡ اَخۡطَاۡنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَآ اِصۡرًا كَمَا حَمَلۡتَهٗ عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ
قَبۡلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ

وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة وَارْحَمْنَا وقفة اَنْتَ
مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ شَهِدَ
اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ
قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي
الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ
تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ
بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ
الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ

الْحَيِّ ؗ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ۝٢٧ اِنَّ
رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِى
الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۢ بِاَمْرِهٖ ط اَلَا لَهُ
الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ط تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ۝٥٤
اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ط اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِيْنَ ۚ۝٥٥ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ
اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ط اِنَّ رَحْمَتَ
اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ۝٥٦

قُلِ ادۡعُوا اللّٰهَ اَوِ ادۡعُوا الرَّحۡمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدۡعُوۡا
فَلَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى ۚ وَلَا تَجۡهَرۡ بِصَلَاتِكَ وَلَا
تُخَافِتۡ بِهَا وَابۡتَغِ بَيۡنَ ذٰلِكَ سَبِيۡلًا ﴿١١٠﴾
وَقُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ لَمۡ يَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّلَمۡ يَكُنۡ
لَّهٗ شَرِيۡكٌ فِى الۡمُلۡكِ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ
وَكَبِّرۡهُ تَكۡبِيۡرًا ﴿١١١﴾
اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ عَبَثًا وَّاَنَّكُمۡ اِلَيۡنَا
لَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الۡمَلِكُ الۡحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡكَرِيۡمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنۡ يَّدۡعُ مَعَ
اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرۡهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ

عِنۡدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفۡلِحُ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلۡ رَّبِّ
اغۡفِرۡ وَارۡحَمۡ وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجۡرًا ۙ﴿۲﴾
فَالتّٰلِيٰتِ
ذِكۡرًا ۙ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمۡ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَرَبُّ الۡمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾ اِنَّا
زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡيَا بِزِيۡنَةِ
الۡكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾ وَحِفۡظًا مِّنۡ كُلِّ شَيۡطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾
لَا يَسَّمَّعُوۡنَ اِلَى الۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰى وَيُقۡذَفُوۡنَ مِنۡ
كُلِّ جَانِبٍ ۖ﴿۸﴾ دُحُوۡرًا وَّلَهُمۡ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۹﴾

اِلَّا مَنۡ خَطِفَ الۡخَطۡفَةَ فَاَتۡبَعَهٗ شِهَابٌ
ثَاقِبٌ ﴿۱۰﴾ فَاسۡتَفۡتِهِمۡ اَهُمۡ اَشَدُّ خَلۡقًا اَمۡ مَّنۡ
خَلَقۡنَا ؕ اِنَّا خَلَقۡنٰهُمۡ مِّنۡ طِيۡنٍ لَّازِبٍ ﴿۱۱﴾
يٰمَعۡشَرَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ اِنِ اسۡتَطَعۡتُمۡ اَنۡ
تَنۡفُذُوۡا مِنۡ اَقۡطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ
فَانۡفُذُوۡا ؕ لَا تَنۡفُذُوۡنَ اِلَّا بِسُلۡطٰنٍ ﴿۳۳﴾ فَبِاَىِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۴﴾ يُرۡسَلُ عَلَيۡكُمَا شُوَاظٌ
مِّنۡ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنۡتَصِرٰنِ ﴿۳۵﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۶﴾ فَاِذَا انۡشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَكَانَتۡ وَرۡدَةً كَالدِّهَانِ ﴿۳۷﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ
وَّلَا جَآنٌّ ۚ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ لَوْ
اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا
مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ
الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ
الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۴﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا
اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿۱﴾ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ
فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾ وَّاَنَّهٗ
تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا
وَلَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ
شَطَطًا ۙ﴿۴﴾

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ یٰۤاَیُّہَا الۡکٰفِرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ
﴿۲﴾ۙ وَ لَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ
مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۙ﴿۴﴾ وَ لَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ﴿۵﴾
لَکُمۡ دِیۡنُکُمۡ وَلِیَ دِیۡنِ ٪﴿۶﴾

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۬ۙ
وَ لَمۡ یُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ٪﴿۴﴾

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنْ شَرِّ
النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا
حَسَدَ ﴿۵﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ
النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۬ۙ الْخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾
الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

आयाते सेहर

शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अ़लैह ने इन

आयात को जादू के ख़त्म करने के सिलसिले में निहायत मुजर्रब और नफ़ा बख़्श बयान किया है:

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ ط اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ○ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ○ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ○ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ○ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَ انْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ○ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ط وَ لَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ○

मुअ़व्वज़तैन का मस्नून विर्द हिफ़ाज़त के लिए

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : सुबह शाम तीन तीन मर्तबा सूरह-ए-इख़्लास़ सूर-ए-फलक और सूर-ए-नास पढ़ लिया करो तो ये तुम्हारी बलाओं और मस़ाइब के लिए काफ़ी है। (अबू दाऊद: ५०८२, अ़न अ़ब्दिल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ि.)

सेह़र वग़ैरह से हिफ़ाज़त का मस्नून अ़मल

ह़ज़रत कअ़्ब अह़बार रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फरमाते हैं अगर मैं ये दुआ़ ना पढ़ा करता तो यहूदी मुझे गधा बना देते:

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللهِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ شَىْءٌ
اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِىْ
لَايُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ وَبِاَسْمَاءِ اللهِ الْحُسْنٰى
كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا
خَلَقَ وَبَرَاَ وَذَرَاَ۔

(موطا ،مالك بن انس : ٣٥٠٢،
ت:محمد مصطفى الاعظمى،)

अऊ़ज़ु बिवज्हिल्लाहिल अ़ज़ीम. अल्लज़ी लैस शैउन अअ्ज़म मिन्हु व बिकलिमाति-ल्लहि-त्ताम्मातिल्लाती ला यूजाविज़ु हुन्न बर्रुं व्वला फ़ाजिरुं व बिअस्माइ-ल्लाहिल हुस्ना कुल्लिहा मा अ़लिम्तु मिन्हा व मा लम आअ्लम मिन शर्रि मा ख़लक़ व ब-र-अ व ज़-र-अ।

तर्जमा: मैं पनाह माँगता हूँ अल्लाह की ज़ात से जो बड़ी अ़ज़्मतों का मालिक है, कोई चीज़ अ़ज़्मत में उस से बढ़ी हुई नही है और अल्लाह के पूरे कलिमात के ज़रिये (पनाह मांगता हूँ) जिन से कोई नेक व बद आगे नहीं बढ़ सकता और अल्लाह के तमाम अच्छे अच्छे नामों के ज़रिये (पनाह चाहता हूँ) जिन को मैं जानता हूँ और जिन को मैं नही जानता, उस चीज़ के शर से जिस को उस ने पैदा किया, बनाया और फ़ैलाया।

जिन्नात से ह़िफ़ाज़त की दुआ़

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसउ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि लैलतुल जिन में एक जिन आग का शोला लेकर आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और आप को जलाना चाहा तो ह़ज़रत जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा: ऐ

अल्लाह के रसूल ! मैं ऐसे कलिमात न सिखाउं जिन्हें आप पढ़ेंगे तो उस की आग बुझ जायेंगी और वो मुँह के बल गिरेगा वो ये है:

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ التى لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَ مِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْاَرْضِمَا تَخْرُجُ مِنْهَا وَ مِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمٰنُ۔

(الدعاء للطبرانی: ۲۔۱۲۹۳، رقم ۱۰۵۸)

अऊज़ू बिवज्हिल्लाहिल करीमि व बिकलिमाति-ल्लाहि-त्ताम्मतिल्लती ला युजाविज़ु

हुन्न बर्रूं व्व ला फ़ाजिरूं मिन शर्रि मा यंज़िलु मिन-स्समाई व मा यअ्रूजु फीहा व मिन शर्रि मा ज़रअ फ़िल अर्ज़ि व मा तख़रूजु मिन्हा, व मिन शर्रि फितनि्ल्लैलि वन्नहारि, व मिन शर्रि तवारिकि्-ल्लैलि वन्नहारि इल्ला तारिकं-य्यतरूकु बिख़ैरिं-य्या रह़मान।

तर्जमा: मैं पनाह चाहता हूँ अल्लाह की ज़ात से जो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है और उस के कलिमात से जो पूरे हैं जिन से कोई नेक व बद आगे नहीं बढ़ सकता उस चीज़ की बुराई से जो आस्मान से उतरे और आस्मान की तरफ चढ़े और उन चीज़ों की बुराई से जिन को उस ने ज़मीन में पैदा किया और उन चीज़ों की बुराई से जो ज़मीन से निकलती हैं और रात व दिन के फ़ितनों से और शब व रोज़ के ह़ादसों से सिवाए उस ह़ादसे के जो बेहतर है ऐ रह़मान!

बच्चों के लिए मस्नून तावीज़

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फरमाते हैं कि हज़रत ह़सन और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के लिये आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इन कलिमात से तावीज़ फ़रमाते थे:

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّآمَّاتِ مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ.

अऊ़ज़ू बिकलिमाति-ल्लाहि-त्ताम्मती मिन कुल्लि शैतानिं व हाम्मतिं व मिन कुल्लि ऐनि-ल्लाम्मह।(बुख़ारी:३३७१ अ़न इब्ने अ़ब्बास रज़ि.)

तर्जमा : मैं तुम दोनों को हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर लग जाने वाली नज़र से अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के साथ पनाह देता हूँ।

फ़ाइदा : इन दुआवों के पढ़ने का तरीक़ा ये है कि रोज़ाना मंज़िल से ले कर यहां तक पढ़ कर पानी में दम कर के पिऐं और पिलाऐं और हाथों पर दम कर के पूरे बदन पर फ़ेर लें और घर वालों पर दम कर दें इन्शा अल्लाह हर क़िस्म की तकलीफ़ से नजात होगी।

00000

दुआ

या अल्लाह हमें आ़फ़ियत के साथ ह़क़ दिखलाईए, ह़क़ समझाईये ह़क़ पे चलाईए, ह़क़ पे जमाईए ह़क़ की ह़िफ़ाज़त और उसके फ़ैलाने के लिए हमें क़बूल फ़रमाईए और अहले ह़क़ के साथ हमारा हश्र फ़रमाईए।